सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2014 वर्ष 13 अंक 10

रबीउल अव्वल

मास रबीउल अव्वल आया, जन्म नबी ने इसमें पाया
जब भी हम पर मास ये आया, जन्म नबी का याद है आया
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

नबी हमारे जग के नायक, सत्य असत्य में हैं निर्णायक
रब ने जो कानून उतारा, नबी हैं उसके वाहक शिक्षक
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

नबी पे उतरा रब का कलाम, नबी हमारे सब के इमाम
नबी ने हमको रब से जोड़ा, हमको सिखाये रब के नाम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

प्रेम नबी ईमान हमारा, उनका क़ौल इस्लाम हमारा
उनके सहाबा सब थे अच्छे, सब सुन लें एलान हमारा
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम,

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	5
अल्लाह के आखिरी रसूल	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	7
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	11
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	15
मायूस (निराश) क्यों खड़ा है	मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी	17
हमारी समस्याओं का समाधन	मौ0सै0 मुहम्मदुल हसनी रह0	20
चुग़ल खोरी (परोक्ष निन्दा)	अल्लामा अशरफ अली थानवी रह0	22
कुछ पैगम्बरों और बुजुर्गों	फौज़िया कामिला बी0ए0	24
कर बन्दगी ख़ुदा की (पद्य)	इदारा	27
दुरूद व सलाम (पद्य)	मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	32
हमारी नई नस्ल और	डॉ0 हैदर अली खाँ	36
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

आयतल़ कुर्सी

अनुवाद- अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह ज़िन्दा है सब का थामने वाला[1] नहीं पकड़ सकती उसको ऊँघ और न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, ऐसा कौन है जो सिफारिश करे उसके पास मगर इजाज़त से, जानता है जो कुछ बन्दों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे और वह सब मालूम नहीं कर सकते किसी चीज़ का उसकी मालूमात में से मगर जितना कि वही चाहे, गुंजाइश है उसकी कुर्सी में तमाम आसमानों और ज़मीन को, और भारी नहीं उसको थामना उनका, और वही है सबसे बरतर अज़मत वाला[2](255)।

आयतल़ कुर्सी के खास फज़ाइल

यह आयत कुर्आन की अज़ीम तरीन आयत है, अहादीस में इसके बड़े फजाइल व बरकात जिक्र किये गये हैं। मुस्नदे अहमद की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको सब आयात से अफज़ल फरमाया है।

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन में अजीम तर आयत कौन सी है? फरमाया "आयतल कुर्सी" (इब्ने कसीर)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सूर–ए–बकर में एक आयत है जो कुर्आन की आयात की सरदार है, वह जिस घर में पढ़ी जाये शैतान उससे निकल जाता है, नसई की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स हर नमाजे फर्ज के बाद आयत कुर्सी पढ़ा करे तो उसको जन्नत में दाख़िल होने के लिए बजुज़ मौत के कोई चीज रुकावट नहीं है, यानी मौत के बाद फौरन वह जन्नत के आसार और राहत व आराम का मुशाहिदा करने लगेगा।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. इस आयत में अल्लाह तआला की तौहीदे ज़ात व सिफात का बयान एक अजीब व गरीब अंदाज में बयान किया गया है, जिसमें अल्लाह का मौजूद होना, जिन्दा होना, समीअ़ व बसीर होना, मुतकल्लिम होना, वाजिबुल वजूद होना, दाइम व बाक़ी होना, सारी कायनात का पैदा करने वाला होना, तगय्युरात और तअस्सुरात से बाला तर होना, तमाम कायनात का मालिक होना, साहिबे अजमत व जलाल होना, कि उसके आगे कोई बग़ैर उसकी इजाज़त के बोल नहीं सकता, ऐसी कुदरते कामिला का मालिक होना कि सारे आलम और कायनात को पैदा करने, बाक़ी रखने, और उनका निज़ाम मज़बूत व क़ाइम रखने से उसको न कोई थकान पेश आती है न सुस्ती, ऐसे इल्मे मुहीत (विस्तृत ज्ञान) का

मालिक होना जिससे कोई खुली या छुपी चीज़ का कोई ज़र्रा या कतरा बाहर न रहे, यह इस आयत का संक्षेप मफ़हूम है, अब तफसील के साथ उसके अलफाज के मानी सुनियेः—

इस आयत में लफज़े "अल्लाह" जिसके माने हैं वह जात जो तमाम कमालात की जामेअ़ और तमाम कमियों से पाक है और सिर्फ वही काबिले इबादत है, लफजे "हय्युन" के माने ज़िन्दा के हैं यानी वह हमेशा जिन्दा और बाक़ी रहने वाला, और मौत से बालातर है लफज़े "कय्यूम" के माने हैं जो खुद क़ाइम रह कर दूसरों को क़ाइम रखता और संभालता है अल्लाह की इस खास सिफत में कोई मखलूक़ शरीक नहीं हो सकती क्योंकि जो चीजें खुद अपने वजूद व बक़ा में किसी दूसरी चीज़ की मोहताज़ हों वह किसी दूसरी चीज़ को क्यों संभाल सकती हैं लफज़े "सिनतुन" के माने ऊँघ के हैं जो नींद के शुरुआती आसार होते हैं "नौमुन" मुकम्मल नींद को कहते हैं यानी अल्लाह ऊँघ और नींद सबसे बरी व बाला है यानी कोई शख़्स अल्लाह को अपने ऊपर या दूसरी मखलूकात पर कियास न करे कि यह सारे काम उसकी कुदरते कामिला के सामने कुछ मुश्किल नहीं न उसके लिए थकान का सबब हैं कि उसको सोने और आराम की ज़रूरत पड़े वह इन तमाम चीज़ों से बालातर है और आगे इरशाद है कि वह तमाम चीजों का जो आसमनों और ज़मीन में है वह सब का मालिक व मुखतार है जिस तरह चाहे उनसे काम ले, जब वह तमाम काइनात का मालिक है उससे बड़ा और उसके ऊपर कोई हाकिम नहीं तो कोई उससे किसी काम के बारे में सवाल व जवाब का हकदार नहीं हर हाल में उसका हुक्म मानना है और किसी को बिना अल्लाह की इजाज़त के सिफारिश की इजाज़त न होगी हाँ कुछ अल्लाह के खास बंदों को कलाम और शिफाअ़त की इजाज़त दे दी जायेगी, हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि महशर में सबसे पहले मैं सारी उम्मतों की शिफाअ़त करूंगा, इसी का नाम "मक़ामे महमूद" है जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुसूसियात में से है।

आगे फरमाया गया कि अल्लाह का इल्म इस तरह है कि वह लोगों के आगे पीछे पैदा होने से पहले पैदा होने के बाद, और खुले और छिपे सारे हालात व वाकिआत से बा खबर है इन्सान का इल्म तो बाज चीज़ों पर है बाज पर नहीं, इसमें यह बात भी बतलाई गई कि पूरे काइनात के एक एक चीज़ का पूरा पूरा इल्म सिर्फ अल्लाह तबारक व तआला की खुसूसी सिफ़त है इन्सान या कोई मख्लूक़ उसमें शरीक नही हो सकती।

आगे अल्लाह की कुर्सी का ज़िक्र है जिसके बारे में मुस्तनद रिवायाते हदीस से इतना मालूम होता है कि अ़र्श और कुर्सी बहुत अ़ज़ीमुश्शान जिस्म हैं जो तमाम आसमान और ज़मीन से बदर्जहा बड़े हैं।

शेष पृष्ठ .....10.. पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मुजाहिद की फजीलत और आप सल्ल० की तमन्ना

मुजाहिद की मिसाल–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि किसी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रास्ते में जिहाद के बराबर कोई अमल है, फरमाया तुम उसकी ताक़त नहीं रख सकते, वह दो या तीन बार यही प्रश्न करते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर बार यही फरमाते रहे कि तुम उसकी ताक़त नहीं रखते, फिर फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला उस आदमी की तरह है जो हमेशा नमाज़ में खड़ा रहे और हमेशा रोज़े रखे, और अल्लाह की आयतों पर अमल करे और रोज़ा नमाज़ में मुजाहिद फी सबीलिल्लाह के वापस आने तक कभी सुस्ती न करे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

यह शब्द मुस्लिम के हैं और बुखारी की रिवायत में है क एक आदमी ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे ऐसा अमल बताइये जो जिहाद का बदल हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐसा कोई अमल नहीं, फिर फरमाया क्या तुम इसकी ताक़त रखते हो कि मुजाहिद जिहाद के लिए निकले और तुम अपनी मस्जिद में नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ और रोज़ा भी हो मगर मुजाहिद के वापस आने तक न रोज़ा इफ़्तार करो (यानी नाग़ा न करो) और न नमाज़ में सुस्ती करो, वह बोले भला किस को ताक़त है।

बेहतरीन ज़िन्दगी–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बेहतर ज़िन्दगी उस शख़्स की है जो अपने घोड़े की लगाम अल्लाह के रास्ते में थामे रहे जैसे ही कोई धमाका या घबराहट की बात सुने तो तुरन्त उड़ कर उसकी पीठ पर बैठ जाये शहादत या मौत के मौके की तलाश में रहे या वह आदमी जो अपनी भेड़ या बकरी को लेकर किसी घाटी या वादी में रहे और नमाज़ पढ़े जकात दे और अपने रब की इबादत में मशगूल रहे यहाँ तक कि उसको मौत आ जाये और लोगों से सिवाये भलाई के कोई वासता न रखे। (मुस्लिम)

मुजाहिद की जन्नत–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआला ने जिहाद करने वालों के लिए तैयार कर रखे हैं और हर दो दर्जे में ऐसा फर्क़ है जैसे आसमान व ज़मीन में। (बुखारी)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अल्लाह को अपना रब समझ

कर, इस्लाम को अपना दीन समझ कर और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना रसूल समझ कर राज़ी हो जाये उस पर जन्नत वाजिब हो गई, हज़रत अबू सईद खुद्री रज़ि0 को यह बात पसंद आई, अर्ज किया या रसूलुल्लाह इस बात को फिर फरमाइये, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोबारा इरशाद फरमाया, फिर फरमाया दूसरी चीज़ ऐसी है कि अल्लाह तबारक व तआला, अपने बन्दों को जन्नत में सौ दर्जे अता फरमायेगा और हर दो दर्जों में ऐसा फर्क है जैसे आसमान ज़मीन का फर्क, हज़रत अबू सईद खुद्री रज़ि0 ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह चीज़ क्या है, फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। (मुस्लिम)

जन्नत के दरवाज़े तलवारों की छाँव में-

हज़रत अबू बक्र बिन अबी मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अपने बाप से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद नक़्ल करते सुना है, दुशमन सामने थे और वह कह रहे थे कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जन्नत के दरवाज़े तलवारों की छांव में हैं, एक आदमी फटे पुराने कपड़े पहने मौजूद था, वह यह हदीस सुन कर खड़ा हो गया और बोला, ऐ अबू मूसा! क्या तुमने इस हदीस को रलूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से सुना है, कहा हाँ, तो वह अल्लाह का बन्दा अपने साथियों के पास गया, उनको रुखसती सलाम किया और तलवार की मियान को तोड़ कर दुशमन पर टूट पड़ा, उस तलवार से दुशमनों को मारते मारते जामे शहादत पी गया। (मुस्लिम)

अल्लाह के रास्ते का गुबार-

हज़रत अबू अबस रज़ि0 अब्दुर्रहमान बिन जुबैर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिस बन्दे के क़दम अल्लाह के रास्ते में गर्द आलूद हुए तो उसको आग नहीं छू सकती। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि जो शख़्स अल्लाह के डर से रोया तो उसका दोज़ख में जाना इस तरह ना मुमकिन है जिस तरह दुहे हुए दूध का थनों में जाना ना मुमकिन है और किसी अल्लाह के बन्दे पर अल्लाह के रास्ते का गर्द व गुबार और जहन्नम का धुवाँ जमा नहीं हो सकता। (तिर्मिज़ी)

दो आँखें जिनको आग छू नहीं सकती-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इरशाद फरमाते सुना है कि दो आँखों को आग नहीं छू सकती, एक वह आँख जो अल्लाह के डर से रोई, दूसरी वह जो अल्लाह के रास्ते में पहरा देती रही। (तिर्मिज़ी)

❖❖❖

अल्लाह के आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
(ईमान-महब्बत-इताअत)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

ईमानः- अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का आख़िरी रसूल अर्थात अन्तिम नबी मानना, परन्तु आपको नबी और रसूल मानना उस वक्त तक सही नहीं हो सकता जब तक अल्लाह पर ईमान न लाएं। कोई पूछे हम ईमान लाना चाहते हैं तो हम क्या करें? तो उससे कहा जाएगा कहो ''अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह व अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह'' जिसका अर्थ है ''मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूं कि आदरणीय मुहम्मद (उन पर अल्लाह की कृपा और अल्लाह की सलामती हो) अल्लाह के नबी और रसूल हैं। नबी का अर्थ है अल्लाह की ओर से सूचनाएं देने वाला और रसूल का अर्थ है सन्देष्टा'' अर्थात अल्लाह की ओर से उसके आदेश और सूचनाएं उसके बन्दों तक पहुंचाने वाला। यदि कोई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बड़ा सम्मान करे, आपको महान पुरुष माने, आपकी बड़ी प्रशन्सा करे परन्तु आपको आखिरी नबी और रसूल न माने तो उसको इस संसार में सम्मान भी मिल सकता है, पद भी मिल सकता है, उच्च स्थान भी प्राप्त हो सकता है परन्तु मरने के पश्चात के जीवन में मोक्ष (नजात) नहीं प्राप्त हो सकता, मोक्ष प्राप्त होने से तातपर्य है मरने के पश्चात क़ियामत तक के बरज़ख़ी जीवन में आनन्द मिलना फिर कियामत के पश्चात् जहन्नम की आग तथा उसके दुख से छुटकारा पाकर अल्लाह की प्रसन्नता और जन्नत का सुख प्राप्त होना है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानने का यह मतलब है कि आपने अल्लाह की ओर से जितनी बातें बताई हैं सबको सच जानना, आप ने परोक्ष की बातें बताई जिनको हमारी आँखों ने नहीं देखा न संसार में हम उनको देख सकते हैं उन सबको अपनी देखी हुई चीज़ों से ज़ियादा यकीनी मानना, जैसे बताया क़ियामत आएगी सब कुछ मिट जाएगा फ़िर सब जीवित हो जाएंगे, कर्मों का लेखा जोखा होगा फिर कर्मों के अनुसार जहन्नम की आग का दुख मिलेगा या जन्नत का सुख मिलेगा जहन्नम का विस्तार से परिचय दिया, जन्नत का विस्तार से परिचय दिया उस सबको मन से मानना, फिरिश्तों और जिन्नों के विषय में जो कुछ बताया यद्यपि वह हमारी आँखों से ओझल हैं उनको मानना, इब्लीस और शैतानों के विषय में भी जो कुछ बताया उस सब को मानना, इसी प्रकार मानव जाति तथा जिन्नों के लिए जो अल्लाह के रसूल ने आदेश अल्लाह की ओर से कुर्आन के रूप में लाए हैं उस सब को मानना और यह

मानना कि उन आदेशों के मानने से अल्लाह प्रसन्न होगा और जन्त का पुरस्कार देगा तथा आदेशों का उल्लंघन करने से अल्लाह अप्रसन्न होगा और न मानने वालों पर अल्लाह का प्रकोप होगा उनको जहन्नम की आग का दण्ड मिलेगा। तात्पर्य यह है कि अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ भी बताया है सब को मानना ज़रूरी है और उनकी बताई हुई एक बात को भी न मानना आपको रसूल न मानना है। हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर बात को मानते हैं और यह भी मानते हैं कि आप अन्तिम रसूल हैं अब आपके पश्चात कोई रसूल न आएगा।

इस विषय को भलीभांति समझने के लिए कुर्आने मजीद की सू–रए–अअ़राफ की आयत 157 पढ़िये जिसके अनुवाद का सारांश इस प्रकार है– अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को आदेश दिया कि "आप कहिये कि ऐ समस्त संसार के लोगो, अल्लाह तआला ने मुझको तुम सब की ओर अपना रसूल (सन्देष्टा) बना कर भेजा है, वह अल्लाह जिसका राज सभी आकाशों पर भी है और धरती पर भी है (अर्थात उसके शासन तथा सत्ता से कोई वस्तु बाहर नहीं है) उसके अतिरिक्त और कोई पूज्य नहीं है वही जीवन देता है और वही जीवन ले लेता है अतः उस पर ईमान लाओ अर्थात उसके नबी द्वारा बताए उसके नामों और गुणों के साथ उसको मानो, और उसके सन्देष्टा पर भी ईमान लाओ वह ऐसे नबी हैं जिन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से कुछ पढ़ा ही नहीं अर्थात वह उम्मी हैं, वह स्वयं अल्लाह पर और उसकी बातों (कलिमात) पर ईमान रखते हैं, उन पर ईमान लाने के साथ उनका अज्ञा पालन तथा उनका अनुकरण करो ताकि सत्य मार्ग पा लो।

महब्बत (प्रेम)– एक मुसलमान के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह तआला की अपार कृपा तथा दया के सम्बन्ध से अल्लाह तआला से प्रेम करे, पवित्र कुर्आन में है "ईमान वाले लोग अल्लाह से अत्यधिक प्रेम रखते हैं इसी प्रकार हर मुसलमान, करुणा के भंडार अपने प्रिय नबी से गहरा प्रेम रखता है, स्वयं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है कि किसी का ईमान उस वक्त तक पूरा नहीं हो सकता जब तक वह अपने माँ बाप, अपनी संतान, और संसार की हर वस्तु बल्कि अपने प्राण से भी अधिक मुझ से प्रेम न करे, इस विषय पर कई हदीसें हदीस की किताबों में विद्यमान हैं स्वयं अल्लाह तआला अपने सृष्टि में अपने प्यारे नबी पर सब से अधिक कृपा करता है, पवित्र कुर्आन में है–

"निःसंदेह अल्लाह तआ़ला अपने नबी पर अपनी दया तथा कृपा उतारता है और अल्लाह के फिरिश्ते नबी पर अल्लाह से दया तथा कृपा करते रहने की प्रार्थना करते रहते हैं (फिर आदेश होता है) ऐ ईमान वालो तुम भी नबी पर कृपा उतारने की अल्लाह तआला से प्रार्थना किया करो और रसूल पर

अल्लाह की सलामती ख़ूब ख़ूब माँगा करो"। प्यारे नबी अपने अनुयाइयों पर बड़े ही कृपालू हैं पवित्र कुर्आन में है "निःसंदेह तुम्हीं में से तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल आया है जिसको, तुम पर कोई कष्ट आता है तो दुख होता है" वह तुम्हारी भलाइयों की लालसा रखता है वह ईमान वालों पर करुणा वान तथा दयावान है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत का तकाजा यह है कि आप की सुन्नतों से भी महब्बत की जाए और आपने जिससे महब्बत की उससे भी महब्बत की जाए, आप अपने सहाबा से महब्बत करते थे अतः आपके सहाबा से भी महब्बत की जाए, आपकी एक हदीस का अर्थ इस प्रकार है "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो, और मेरे बाद उनको बुरा न कहने लगना, जिसने मेरे सहाबा से महब्बत की उसने मेरी महब्बत की वजह से महब्बत की, और जिसने उनसे बुग्ज़ (दुश्मनी) रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखने के सबब बुग्ज़ रखा।

इताअ़त (अज्ञापालन तथा अनुकरण)- अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान तथा उनसे प्रेम उस वक्त तक सिद्ध नहीं हो सकता जब तक आपका अज्ञापालन न किया जाए आपका अनुकरण न किया जाए अल्लाह तआला अपने रसूल को भेज कर उन पर अपनी अन्तिम पुस्तक (पवित्र कुर्आन) उतारी, इसका उपदेश यही है कि अल्लाह के बन्दे कुर्आन के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें और इस संसार में अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार समाज चलाएं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवन पवित्र कुर्आन की व्याख्या है, पवित्र कुर्आन के आदेशानुसार जीवन बिताना अल्लाह के रसूल का आज्ञापालन करना है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण करना अल्लाह का अज्ञापालन है, पवित्र कुर्आन में स्पष्ट बताया गया है "जिसने रसूल का आज्ञापालन किया उसने अल्लाह का अज्ञा पालन किया पवित्र कुर्आन की बहुत सी आयतों में जहां अल्लाह की आज्ञा पालन का आदेश है वहीं अल्लाह के रसूल की आज्ञापालन का आदेश है।

स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि जिसने मेरे तरीक़े (जीवन यापन विधि) से मुंह मोड़ा वह मुझसे नहीं है अर्थात मेरे अनुयायों (मानने वालों) में से नहीं है। दूसरी जगह बताया जिसने मरे तरीक़े (सुन्नत) से प्रेम किया अर्थात उसे अपनाया, उसने मुझ से प्रेम किया, और जिसने मुझसे प्रेम किया वह जन्नत में मेरे पास होगा।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि नमाज़ से मेरी आँखों को ठन्डक मिलती है, और बताया कि कुफ्र और इस्लाम के बीच नमाज़ ही का अन्तर है और बताया कि हमारे और ईमान लाने वालों के बीच नमाज़ की प्रतिज्ञा है, जिसने नमाज़ छोड़ी उसने कुफ्र किया अतः जो व्यक्ति नमाज़ न पढ़े वह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से झूठी

महब्बत का दावा करता है, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि इस्लाम का आधार पाँच बातें हैं, पहली बात यह मानना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं दूसरी बात नमाज़ काइम करना, तीसरी बात अपने माल पर वार्षिक जक़ात निकाल कर ग़रीब भाइयों को देना, चौथी बात रमजान के रोजे रखना, पाँचवीं बात अगर मक्का मुकर्रमा तक आने जाने का सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार हज करना, अब अगर कोई व्यक्ति अल्लाह के रसूल पर ईमान लाया हो और आप से महब्बत का दावा करता हो मगर उक्त बातों को नज़र अन्दाज़ (अन्देखी) करता हो तो कहा जाएगा कि वह अपने दावे में झूठा है। अल्लाह उसे सही रास्ता दिखाए।

अल्लाह तआला के करम से हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखते हैं, आपसे महब्बत करते हैं आप की सुन्नतों से महब्बत रखते हैं और इम्कान भर सुन्नतों पर अमल करते हैं, आपके सहाबा आपकी औलाद, आपकी अज़वाज (अल्लाह इन सबसे राज़ी हुआ) से प्रेम रखते हैं, हमारे पाठक भी ऐसा ही विश्वास रखते हैं अल्लाह तआला अपने पसंदीदा रास्ते पर हम सबको चलाए, आमीन!

ज़ौक़ रख सुन्नते गिरामी से
है शरफ़ आपकी गुलामी से
जो कोई पैरवे रसूल नहीं
लाख ताअ़त करे क़बूल नहीं

सल्लल्लाहु अलैहि व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारक व सल्लम

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

इब्ने कसीर रह0 ने ब रिवायत हज़रत अबू ज़र गिफारी रज़ि0 नकल किया है कि उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि कुर्सी क्या और कैसी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कसम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है कि सातों आसमानों और ज़मीनों की मिसाल कुर्सी के मुकाबले में ऐसी है जैसे एक बड़े मैदान में कोई अंगूठी का छल्ला डाल दिया जाये, और बाज दूसरी रिवायात में है कि अर्श के सामने कुर्सी की मिसाल भी ऐसी ही है जैसे एक बड़े मैदान में अंगूठी का छल्ला।

आगे फरमाया की अल्लाह को आसमान व ज़मीन की हिफ़ाजत कुछ गिरां व भारी नहीं मालूम होती, क्योंकि उस कादिरे मुतलक की कुदरते कामिला के सामने यह सब चीज़ें निहायत आसान हैं, यहां तक अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफात के कमालात बयान हुए हैं इनको देखने और समझने के बाद हर अक़्ल रखने वाला इन्सान यही कहने पर मजबूर है कि हर इज़्ज़त व अ़ज़मत और बुलन्दी व बरतरी की मालिक वही जाते पाक है इस पूरी आयत में अल्लाह तआला की सिफाते कमाल और उसकी तौहीद का मज़मून पूरी वज़ाहत और तफ़सील के साथ आ गया।

(आयतल कुर्सी से मुतअ़ल्लिक यह बातें मआ़रिफुल कुर्आन से ली गयीं हैं)

❖❖❖

जननायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आख़िरी हज—

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में चार दिन क़याम के दरमियान नमाज़े कस्र अदा फ़रमाते रहे और ज़ुमेरात के दिन चाश्त के वक्त मुसलमानों के साथ मिना तशरीफ ले गए। जिन्होंने एहराम खोल दिया था वह अपने घरों से हज का एहराम बांध कर निकले। उस वक्त वह मस्जिदे हराम नहीं गए। जब आप मिना पहुंचे तो वहां ज़ुहर और अस्र की नमाज़ अदा की और वहां रात गुज़ारी, जब सुबह हुई तो अरफात को रवाना हुए और "ज़ब" का रास्ता इख़्तियार फरमाया। सहाबा कराम में से कुछ तलबिया कह रहे थे और कुछ तकबीर। आप दोनों को सुन रहे थे मगर कुछ न कहते थे।

अरफात के पूर्वी हिस्से में मकामे नमरा के पास आ गए थे, खेमा खड़ा कर दिया गया, उसमें आपने क़याम फरमाया। सूरज ढ़लने के बाद कसवा ऊँटनी पर सवार हो कर वादी—ए—अरना के निचले हिस्से तक गए। उसी मकाम से सवारी ही पर बैठे एक अज़ीमुश्शान ख़ुत्बा दिया उसमें आपने इस्लामी उसूल व क़वाएद (सिद्धान्त व नियम) की वज़ाहत की और जाहिली रस्म व रिवाज का खण्डन किया, जान व माल, इज़्ज़त व आबरू की हुरमत का ऐलान फ़रमाया, जिसे दूसरे मज़हब वालों ने भी तसलीम किया था।

जब आपने खुत्बा खत्म किया तो हज़रत बिलाल को अज़ान देने का हुक्म दिया चुनांचे अज़ान और इक़ामत हुई फिर आपने सिर्री (आहिस्ता) क़िरत से ज़ुहर की दो रकअ़त अदा की।

जब आप नमाज़ से फारिग हो गए तो मैदाने अरफात ही में पहाड़ के दामन में चट्टानों के पास किबला रुख सवारी ही पर इस तरह खड़े हुए कि "मशात" पहाड़ आपके सामने था और सूरज डूबने तक आंसूओं के साथ अपने रब़ के हुज़ूर में दुआ मांगते रहे और लोगों को हुक्म दिया कि वादी—ए—अरना से हट जाएं और फरमाया अरफात पूरे का पूरा वुकूफ की जगह है। लोगों को हुक्म दिया कि वह अपने अपने मशाएर में ठहरे रहें और वहीं वुकूफ करें। क्योंकि यह हज़रत इब्राहीम अलै0 की "मीरास" है।

दुआओं में आप अपना हाथ सीने तक उठा लेते थे जिस तरह कोई मिसकीन (निर्धन) खाना मांग रहा हो, उस मौक़े पर इरशाद फरमाया कि "बेहतरीन दुआ अरफात की दुआ है"।

अरफात में आपकी दुआओं में से यह दुआएं नक़्ल की गयी हैं:—

अनुवादः— "अल्लाह तू ही मेरी बात सुनता है मेरे ठिकाने को देखता है, मेरे खुले व छिपे को जानता है तुझसे मेरा कोई मामला पोशीदा नहीं, मदद का मोहताज और पनाह चाहने वाला, डरने वाला और गुनाहों का इकरार

करने वाला हूँ, तुझसे फकीर की तरह मांगता हूँ और ज़लील व गुनाहगार की तरह आजिज़ी (नम्रता)करता हूँ, डरने वाले की तरह तुझे पुकारता हूँ जिसकी गर्दन तेरे सामने झुकी है आंखें बह रही हैं, जिस्म झुका हुआ है और नाक खाक आलूदा मिट्टी से भरी हुई है मुझे दुआ के बाद महरूम ना फरमा और मेरे साथ शफ़क़त व रहमत, मेहरबानी व दया का मामला फ़रमा। ऐ वह बेहतर और बुलन्द ज़ात जिससे ही अपनी हाजत मांगी जाती है और जो बेहतरीन देने वाला है।'' और आपकी दुआओं में यह भी साबित है।

अनुवादः– ''अल्लाह तू ही तअ़रीफ के लायक है और हम जो कह सकते हैं उससे भी बेहतर है ऐ अल्लाह मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, और मेरा जीना मरना सब तेरे ही लिए है और तेरी ही तरफ लौटना है सारी चीज़ों का मालिक तू ही है ऐ अल्लाह क़ब्र के अज़ाब से और दिल के वसवसों और परेशान करने वाले मामलात से भी तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह उस बुराई से जो आंधी लेकर आए उससे तेरी पनाह चाहता हूँ।''

इमाम अहमद ने हज़रत अमर बिन शुऐब की हदीस से नक़्ल किया है कि अरफ़ा के दिन नबी करीम सल्ल0 की ज़्यादातर यह दुआ थीः–

अनुवादः– ''ऐ खुदा–ए–वाहिद जिसके सिवा कोई माबूद नहीं उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की हम्द है उसी के हाथ में भलाई और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।''

इस मौक़े पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई– अनुवादः– ''आज हमने आपका दीन मुकम्मल कर दिया और आप पर अपनी नेमत पूरी कर दी और दीने इस्लाम आपके लिए पसंद कर लिया'' (अलमाएदा–3)

जब सूरज डूब गया और ज़र्दी भी ख़त्म हो गई और सूरज डूबने में कोई शुबहा नहीं रहा तो आप अरफ़ात से चल पड़े और हज़रत उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे बिठा लिया और सुकून व खामोशी से चलते रहे। ऊँटनी की नकेल अपनी तरफ खींच ली। यहां तक की आपकी ठोड़ी कजावे से छूने लगी, इस मौक़े पर आप फ़रमा रहे थे ''ऐ लोगो सुकून व इत्मिनान से चलो क्योंकि तेज चलना नेकी नहीं है।'' आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ''माज़मीन'' के रास्ते से वापस हुए और ज़ब के रास्ते से अरफात तशरीफ लाए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे रास्ते में बराबर तलबिया (अल्लाहुम्मा लब्बैक) कहते रहते थे। रास्ते में एक जगह आपने पेशाब करके वुजू फरमाया। हज़रत उसामा ने अर्ज़ किया नमाज़ पढ़ना है तो आपने फ़रमाया ''जाए नमाज़ आगे है फिर आप मुज़्दलफा पहुंचे और नमाज़ के लिए वुजू किया और मुअज़्ज़िन को अज़ान देने का हुक्म फरमाया और इक़ामत कहलवायी और फिर मग़रिब की नमाज़ अदा की नमाज़ के बाद लोगों ने सामान उतारा और सवारियों को बिठाया फिर दुबारा इक़ामत कही गयी और इशा

की नमाज़ अदा फरमाई। इशा के लिए अज़ान नहीं कही फिर आप सो गए यहां तक की सुबह हो गई"।

तुलू–ए–फ़ज्र के बाद अव्वल वक़्त में नमाज़ फ़ज्र अदा फ़रमाई और उसके लिए अज़ान व इक़ामत कही गई, फिर सवार हो कर मशअरे हराम के पास आए, दुआ व तज़र्रुअ़ (रोना, गिड़गिड़ाना) तकबीर व तहलील व ज़िक्र इलाही में मशगूल हो गए, यहां तक कि काफी रौशनी हो गई आप मुज़दलफा की उसी जगह खड़े हो कर फरमाया कि पूरा मुज़दलफा "वुकूफ" ठहरने की जगह है। फिर आप मुज़दलफा से हज़रत फज़ल बिन अब्बास को पीछे सवारी पर बिठा कर चले और रास्ते भर तलबिया कहते रहे और उसामा बिन ज़ैद कुरैश की जमाअत के साथ साथ पैदल जा रहे थे। यहीं रास्ते में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास को हुक्म दिया कि "रमयुल जिमार" के लिए सात कनकरियाँ चुन लें। चुनांचे आप उन्हें अपने हाथ में उछालने लगे और फ़रमाने लगे ऐसे ही कनकरियों से रमी करो और दीन में ज़्यादती करने से बचो। और पिछली क़ौमें दीन में गुलू (ज़्यादती) करने की वजह से हलाक हुई। जब आप वादिए मुहस्सर में पहुँचे तो ऊँटनी की रफ़्तार तेज़ कर दी। आपका तरीक़ा यही था कि जब उन मक़ामात पर पहुंचते जहाँ क़ौमों पर अज़ाब नाज़िल हुआ था, जिसका वाकिया अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में ज़िक्र किया है। इसी वजह से उस जगह का नाम वादी–ए–मुहस्सर रखा गया यानी रोक देना और इस जगह हाथी मक्के में दाख़िल होने से रुक गये थे।

इसी तरह मक़ामे हिज्र से गुज़रते हुए भी आपने किया था। मुहस्सर, मिना और मुज़दलफा के दरमियान हद्दे फासिल (सीमा रेखा) है और दोनों में से किसी में नहीं है। इस तरह "अरना" अरफात और मशअरे हराम के दरमियान सीमा रेखा है, इस तरह दो "मशअर" के दरमियान के हद्दे फासिल एक सीमा रेखा है, जो न इसमें दाख़िल है और न उसमें।

चुनांचे मिना हरम में दाख़िल है और मशअर भी है और मुहस्सर हरम में दाख़िल तो है लेकिन मशअर नहीं और मुज़दलफा हरम भी है और मशअर भी है। "अरना" हिल में है और मशअर नहीं है, और अरफात हिल में दाख़िल है और मशअर भी है।

आप जब मिना पहुंचे तो दरमियानी रास्ते से जमरा अकबा के पास आए और जमरा के सामने वादी में इस तरह खड़े हुए कि मक्का अपके बाएं और मिना आपके दाएं हाथ था। फिर सूरज निकलने के बाद सवारी पर से एक के बाद एक सात कनकरियाँ फेंकी हर कनकरी पर तकबीर कहते थे और लब्बैक कहना बन्द कर दिया था। फिर आप मिना वापस आए और बहुत अच्छी और असर करने वाली ज़बान में खुतबा दिया, जिसमें लोगों को क़ुर्बानी के दिन की हुरमत व अज़मत और फ़ज़ीलत बयान फरमाई। और मक्का

की तमाम शहरों पर फज़ीलत से आगाह किया और हुक्म फरमाया कि अल्लाह की किताब के मुताबिक जो हुकूमत करने वाले हों उनकी इताअत करें। फिर इरशाद फरमाया कि मुझ (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मनासिके हज सीख लें मुमकिन है कि यह आख़िरी हज हो। फिर लोगों को हज के मसाएल की तालीम दी और मुहाजिरीन और अन्सार को अपने मरतबों पर रखा और यह हुक्म दिया कि आपके बाद कुफ्र की तरफ न लौटें और एक दूसरे को क़त्ल न करें। आपने तबलीग़े अहकाम का हुक्म दिया और बताया कि "बहुत से सुनने वाले भूल जाते हैं और उनमें सीखने वालों को याद रहता है।" खुतबे में आपने फरमाया कि "मुजरिम खुद अपने ऊपर जुल्म करता है।"

मुहाजिरीन को आपने क़िबले के दाएँ तरफ और अन्सार को बाएँ तरफ उतारा दूसरे लोग उनके गिर्द थे। अल्लाह तआला ने उन लोगों के अन्दर इतनी सुनने की ताकत पैदा कर दी थी, मिना वालों ने भी अपने अपने घरों में आपका खुतबा सुना।

आपने खुतबे में मज़ीद फरमाया कि "अपने रब की इबादत करो और पाँचों नमाज़ें पढ़ो और रमज़ान के महीने के रोज़े रखो, जब हुक्म दिया जाए तो इताअत करो और अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ।"

फिर आपने लोगों को अलविदा किया तो लोग कहने लगे कि यह "हिज्जतुलवदा" है, फिर आप मिना में कुर्बानी के मकाम पर तशरीफ ले गए। चुनांचे वहाँ 63 ऊँट ज़बह किये। ज़िन्दगी के साल के मुताबिक 63 ऊँट ज़बह करने के बाद 100 में से बाकी ऊँटों को ज़बह करने के लिए आपने हज़रत अली को हुक्म दिया और उनके झूल, खाल और गोश्त को मिस्कीनों (ग़रीबों) में तक़सीम कर दिया। कस्साब को मज़दूरी में कुर्बानी की कोई चीज़ देने से मना फ़रमा दिया और बताया की हम उसे अपने पास से उजरत देंगे। और फरमाया जो चाहे कुर्बानियों में से गोश्त काट कर ले जाए।

आपने मिना के मज़बह (कुर्बानगाह) में जानवर ज़बह किया और यह फरमाया कि पूरा मिना का इलाका कुर्बानी की जगह है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिना में अर्ज़ किया गया कि आपके लिए पहले से कोई ख़ेमा वगैरह लगा दिया जाए ताकि गर्मी से हिफ़ाज़त हो जाए तो आपने इजाज़त न दी और फरमाया कि मिना में जो पहले जहां पहुंच गया वह उस जगह का हक़दार हो गया।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जाम से फरमाया कि शुरु करो जब वह फारिग हुआ तो आपने अपने पास वालों पर वह बाल तक़सीम फरमा दिये। फिर मिना वापस आ कर वहीं रात गुज़ारी। जब सुबह हुई तो सूरज ढलने का इन्तिज़ार किया और जब सूरज ढल गया तो जमरात की तरफ पैदल तशरीफ ले गए और जम–रए–ऊला से शुरु

शेष पृष्ठ .....19.. पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुसलमानों की इबादतें (उपासनायें) तथा मुख्य धार्मिक कर्तव्य (फ़रायज़)-

प्रत्येक मुसलमान पर चार बातें अनिवार्य हैं-

प्रत्येक समझदार तथा बालिग़ मुसलमान पर चार चीज़ें अनिवार्य (फ़र्ज़) हैं, और इसी कारण इनको दीन के चार अरकान (अर्थात् चार धर्म–स्तम्भ) कहते हैं।

1). पाँच समय की नमाज़ पढ़ना।

2). यदि किसी मुसलमान के पास एक निर्धारित राशि हो और उस पर एक वर्ष बीत गया हो, तो वह उसमें से चालीसवां भाग निर्धनों पर व्यय करे, इसे ज़कात कहते हैं, और यह फ़र्ज है।

3). रमज़ान मास के पूरे रोज़े रखना।

4). जीवन में एक बार (कुछ विशिष्ठ परिस्थितियों को पूरा करते हुए) ख़ुदा के घर (काबा शरीफ़) का हज करना।

उपर्लिखित वे फ़रायज़ (अनिवार्य क्रियाएं) हैं जिनका नकार करने वाला इस्लाम के क्षेत्र से वहिष्कृत हो जाता है तथा उपर्युक्त बातों को नितान्त छोड़ देने वाला भी मुसलमानों की संस्था से वहिष्कृत है[1]। इन चार धर्म स्तम्भों में ज़कात एवं हज के लिए कुछ शर्तें हैं, और यह भी सम्भव है कि एक मुसलमान पर उसके पूर्ण जीवन में ज़कात तथा हज फ़र्ज़ (अनिवार्य) न हों[2]। परन्तु नमाज़ एवं रोज़े से किसी समझदार तथा बालिग़ को छुटकारा नहीं। रोज़े में भी इतनी गुन्जाइश है कि यदि कोई व्यक्ति रमज़ान में ऐसा बीमार है कि रोज़ा रखना उसके लिए हानिकारक और ख़तरनाक है अथवा यात्रा कर रहा है, तो उस दशा में छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा[3] दूसरे समय हो सकती है, लेकिन नमाज़ में इतनी भी गुन्जाइश नहीं। वह स्वस्थ एवं रोग, देश तथा प्रदेश हर परिस्थिति एवं दशा में अनिवार्य है। हाँ यदि खड़े हो कर न पढ़ सके तो बैठ कर, और बैठ कर भी न पढ़ सके तो लेट कर और अगर यह भी कठिन हो तो संकेत द्वारा पढ़ सकता है, लेकिन नमाज़ की छूट किसी दशा में भी नहीं और न क्षमा की जाएगी, यहाँ तक कि युद्ध की दशा में भी (एक विशेष रूप से) नमाज़ अदा करने का आदेश है[4]। यात्रा की अवस्था

---

1. इन अरकान–इस्लाम (नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात) की वास्तविकता, उनके रहस्य एवं उद्देशों तथा विस्तृत अध्ययन हेतु, लेखक की रचना "अरकान–अरबा" (उर्दू में), "Four Pillars of Islam" अंग्रेज़ी में अध्ययन करें। प्रकाशक "Academy of Islamic research & Publications" मजलिस तहकीकात–व–नशरीयात इस्लाम।
2. विस्तृत अध्ययन हेतु "फ़िक्ह" की पुस्तकों का अध्ययन अथवा किसी विद्वान से पूछना उचित होगा।
3. जो फ़र्ज़ (अनिवार्य क्रिया) अपने समय पर पूरा कर लिया जाए तो अदा और भूल चूक, बीमारी तथा अन्य कारण वश समय पर पूरा न किया जाए उसे क़ज़ा कहते हैं। (अनु0)
4. इसको "सलातुल ख़ौफ़" कहते हैं और इसकी विस्तृत जानकारी हेतु, नमाज़ से सम्बन्धित किताबों का अध्ययन किया जा सकता है।

में इतनी छूट है कि चार रकअत वाली नमाज़ (ज़ुह्र, अस्र, इशा) दो रकअत अदा करे इसमें सुन्नतें तथा नफ्ल नमाज़ें स्वेच्छ हो जाती हैं और उनका आवश्यक होना समाप्त हो जाता है।

पाँच समय की नमाज़ चार अनिवार्य कर्तव्यों में सर्वप्रथम और प्रत्येक परिस्थिति में अनिवार्य हैं-

नमाज़ व्यावहारिक अनिवार्य एवं कर्तव्यों (फ़र्ज़ों) में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा सार्वजनिक तथा सामूहिक कर्तव्य (फ़रीज़ा) है और वह इस्लाम का धार्मिक कृत्य तथा मुसलमान की पहचान बन गई है। यहाँ तक कि उसको इस्लाम के बीच सीमा रेखा का रूप निर्धारित किया गया है।

पाँच नमाज़ों का निर्धारित समय-

ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि प्रत्येक समझदार तथा बालिग़ मुसलमान पर पाँच वक्त की नमाज़ें फ़र्ज़ (अनिवार्य) हैं। फ़ज्र की नमाज़ का समय प्रातः से कुछ समय पूर्व सुबह सादिक़[1] उदय होने पर आरम्भ होता है और सूर्य उदय तक रहता है, इस बीच यह नमाज़ अदा होनी चाहिए। यह नमाज़ दो रकअ़त[2] की होती है, परन्तु चूंकि मनुष्य उस सयम ताज़ा दम होता है और सुहाना समय, अतः इसमें क़िरअत[3], और नमाज़ों की अपेक्षा लम्बी होती है। रात के पिछले पहर सन्नाटे में जब शून्य की दशा होती है और दुनिया मीठी नींद सोती है, फज्र की नमाज़ की अज़ान होती है। अज़ान के परम्परागत शब्दों के साथ (जिनका उल्लेख आगे किया जायगा) मुअज्ज़िन इन शब्दों की (केवल फ़ज्र की अज़ान में) अभिवृद्धि करता है, "अस्सलातु ख़ैरुम मिन्नौम- अस्सलातु ख़ैरुम मिन्नौम" (नमाज़ सोने से उत्तम है- नमाज़ सोने से उत्तम है) और मुसलमान पुरुष तथा महिलाएं यहां तक कि घर के बच्चे सामान्य दशा में इस पर जागरूक हो जाते हैं और नमाज़ की तैयारी शुरु कर देते हैं। फ़र्ज़ की दो रकअतों से पूर्व, जो जमाअत (सामूहिक रूप) से पढ़नी चाहिए, सुन्नत की दो रकअतें अपने अपने तौर पर पृथक पढ़ी जाती हैं, और यह समस्त सुन्नत नमाज़ों में अधिक महत्वपूर्ण हैं। फ़ज्र नमाज़ के बाद सूर्य उदय होने तक कोई नमाज़ नहीं है।

'ज़ुह्र' का समय ठीक मध्यान्ह के बाद अर्थात सूर्य ढलने के बाद से आरम्भ होता है और उस समय तक रहता है जब तक कि हर चीज़ की छाया उसकी दुगनी हो जाए।

'अस्र' का समय ज़ुह्र की समाप्ति से सूर्यास्त तक रहता है, परन्तु अस्र की नमाज़ इतनी देर करके पढ़ना कि सूर्य पीला पड़ जाए, अनुचित है।

---

1. प्रातः को बहुत सबेरे पूर्व की ओर खड़ी सफ़ेदी विदित होती है जिसके पश्चात फिर अंधेरा हो जाता है, उस समय को "सुबह काज़िब" कहते हैं। तत्पश्चात आकाश के किनारे के बराबर सफ़ेदी फैली होती है, उस समय का नाम सुबह सादिक़ है।
2. हाथ बाँध कर खड़े होने तत्पश्चात रुकू (झुकना) फिर दो बार सजदा (ललाट भूमि पर रख देना) तीनों क्रियाओं का करना एक रकअत कहलाता है। (अनु0)
3. क़ुर्आन मजीद का कोई अंश पढ़ना। (अनु0)

शेष पृष्ठ.....27...पर

ायूस (निराश) क्यों खड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है

—मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

यह झूठा प्रोपैगण्डा एक समय से तो किया ही जा रहा था कि इस्लाम इस काल में सामूहिक स्तर पर नहीं चल सकता, लेकिन अब यह खयाल भी लोगों के दिलों में आने लगा है कि व्यक्तिगत जीवन में भी इस्लाम पर चलना बहुत कठिन हो गया है, और अब इस वातावरण में इस्लाम पर जमे रहना दूध की नहर चालित करने से कम नही लेकिन हमारे निकट यह कल्पना एक धोखे से अधिक कुछ नहीं, इसमें शक नहीं है कि हम एक ऐसे काल में जी रहे हैं जिसमें चारों ओर से हम पर फ़ितनों (उपद्रव) की वर्षा हो रही है, राजनीति तथा अर्थव्यवस्था से लेकर व्यक्तिगत जीवन तथा घरेलू जीवन तक हर जगह भ्रष्टाचार का राज है, मुसलमान जहां कहीं आबाद हैं या तो औरों के जुल्म व सितम (अत्याचार) का शिकार हैं या आपस की फूट में मुबतला (ग्रस्त) हैं, मिथ्या शक्तियाँ उनको हर जगह ललकार रही हैं, और वह उनके भय तथा प्रभुत्व से दबते और पिस्ते चले जा रहे हैं, इस्लाम जो इन तमाम समस्याओं का अचूक समाधान करने आया था, व्यवहारिक जीवन से बाहर हो चुका है दिलों में यह खयाल जमने लगा है कि अगर कोई शख्स इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहे और इस्लाम के आदेशों पर चलना चाहे तो उसके आगे पीछे का भ्रष्ट वातावरण हर कदम पर रुकावट बनेगा।

यह सत्य है कि हमारा समाज और हमारे बाजार घूस खाने, ब्याज खाने, और सट्टा बाज़ी से भरे हुए हैं, झूठ बोलना धोखा देना कोई दोष नहीं रहा। नंगेपन और अशलीलता के दृष्य से निगाहों को शरण का स्थान और खयालों को भागने की जगह नहीं मिलती। रक्त पात, आतंकवाद, और लूटपाट का बाज़ार गर्म है और बात—बात पर दूसरे की जान लेना रोज का काम बन चुका है, हलाल कमाई के रास्ते धीरे धीरे कम होते जा रहे हैं और हराम तथा अवैध आय को माँ का दूध समझ लिया गया है।

प्रकाशन तथा प्रसारण के तमाम साधन तथा मनोरंजन के तमाम तरीके, अल्लाह का भय तथा आखिरत की फिक्र (चिन्ता) नई पीढ़ी के दिल से खुरच—खुरच कर निकाल रहे हैं, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम तक से उनको अपरिचित बनाया जा रहा है।

यह सब क्यों हो रहा है? कैसे हो रहा है? इस परिस्थित में हमें क्या करना चाहिए? पथ भ्रष्टा की यह बाढ़ कैसे रुकेगी? इसे कौन और किस तरह रोक सकेगा? यह वह प्रश्न हैं जो आज हम मुसलमानों को परेशान किए हुए हैं और अब यह परेशानी धीरे—धीरे निराशा में बदलती जा रही है।

प्रश्न यह है कि क्या

हम इन हालात में निराश होकर बैठ जाएँ? और हम भी यह निर्णय ले लें कि इस काल में इस्लाम पर चलना सम्भव नहीं रहा? कदापि नहीं। वातावरण के जिस विकार तथा बिगाड़ से हमारा सामना है उसमें इस्लाम का सबसे पहला निर्देश यह है कि हम अपने सम्बन्ध को अल्लाह के साथ दृढ़ करें, आज हमारी परेशानियों और बेचैनियों का वास्तविक कारण यह है कि हम अपनी चाहत और भौतिकता के दास बन कर रह गये हैं। हमारी निगाह हर समय भौतिक लाभ तथा भोग विलास के आनन्द पर लगी रहती है और अल्लाह तआला के उत्तम व्यक्तित्त्व तथा उच्च गुणों से अपरिचित हो चुके हैं और उसका सर्वशक्तिमान होना हमारी दृष्टि से ओझल हो चुका है।

परन्तु इन समस्त विक्रित परिस्थितियों में निराश होने की कदापि आवश्यकता नहीं है। आज का आधुनिक मनुष्य भौतिकता की अस्थाई चमक–दमक से ऊबा हुआ है, भोग विलास के क्षणिक आनन्द से उक्ताया हुआ है, उसके मन मस्तिष्क शान्ति रहित तथा व्याकुल हैं, उसके सामने यदि इस्लामिक शान्ति भली विधि से लाया जाए तो वह बड़ी सरलता से उसे स्वीकार कर लेगा। रक्तपात, आतंकवाद और भ्रष्टाचार के भंवर में फंसा हुआ मनुष्य जब अल्लाह से शुद्ध सम्बन्ध पायेगा तो पहले ही पग पर लगेगा कि उसके अन्दर क्या कमी थी। जिससे सभी अच्छे साधनों के होते हुए भी उसके जीवन में शान्ति न थी।

यह मानव इस सृष्टि का मालिक तथा स्वामी नही है वह अल्लाह का बन्दा है उसके जीवन का उद्देश्य है कि वह अपने रचयिता की उपासना करे। आज हमारी समस्याओं का समाधान इसी में है कि हमारा सम्बन्ध अल्लाह तआला से जुड़े, यह समस्याओं का ऐसा निवारण है जिसे हर काल और हर समय में अपनाया जा सकता है। इस्लाम की शिक्षाओं में विशेष उपासनाओं, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज आदि की व्यवस्था ऐसे ढंग से की गई है कि यदि मनुष्य इनको शुद्ध रूप से अपनाए तो उसका सम्बन्ध अल्लाह से सुदृढ़ हो जाए। विशेष कर नमाज़ जो अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) से आरम्भ हो कर अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि (तुम सब पर सलामती अर्थात् हर प्रकार की सुरक्षा और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें अर्थात् हर भलाई में वृद्धि हो) पर सम्पन्न होती है बीच में बन्दा अपने मालिक से क्या–क्या कहता है उसके विस्तार का यहाँ अवसर नहीं, मालिक से सम्बन्ध जोड़ने की ऐसी उपासना की उपमा नही। इन्हीं लाभों के कारण उक्त उपासनाओं का स्थान इस्लामिक शिक्षाओं में सर्वप्रथम रखा गया है। अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं का एक तिहाई भाग इन्हीं उपासनाओं पर आधारित है।

इन बिगड़े हालात में भी इन उक्त उपासनाओं का पालन करना कठिन नहीं है, जहाँ कहीं कोई कठिनाई आती भी है तो साहस व

हिम्मत करने पर अल्लाह तआ़ला उस कठिनाई को दूर करके सरलता ले आते हैं।

यदि हम इन इबादतों (उपासनाओं) को ठीक–ठीक अदा करें विशेष कर नमाज़ भली भाँति पढ़ें तो अल्लाह तआ़ला के सर्वशाक्तिमान होने का विश्वास दृढ़ हो जाएगा। और जब अल्लाह के सर्वशक्तिमान होने का विश्वास प्राप्त हो जाए तो कोई समस्या कठिन नहीं लगती और लगता है कि अल्लाह तआ़ला अपनी शक्ति से इसको हल कर देगा। ऐसी दशा में मनुष्य किसी भी कठिनाई में निराश नहीं होता।

अन्त में हम यह कहेंगे कि इस्लामिक शिक्षाओं पर चलते हुए तथा अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों को अपनाते हुए हर दिन लग कर मन से दुआ़ओं का प्रबन्ध करें, विशेष कर इस प्रकार दुआ माँगे, ऐ अल्लाह! मैं अपने वातावरण में विवश हो चुका हूँ, हमारा हर प्रयास असफल दिख रहा है, साहस हार चुका हूँ, ऐसा निर्बल हूँ कि इन अँधेरों से लड़ नहीं सकता, ऐ अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम (कृपा तथा दया) से मुझको शक्ति दीजिए, मुझ निर्बल को बल दीजिए, मेरी सहायता कीजिए, मुझे साहस दीजिए और मुझे इस्लाम पर चलने की शक्ति तथा उस पर जमे रहने और उसका प्रसारण करने का बल दीजिए।

यदि कोई व्यक्ति इस्लाम पर चलते हुए इस प्रकार की दुआ़ओं का प्रतिदिन प्रबन्ध करे तो वह अवश्य ही सफल होगा और उसकी तमाम समस्याएँ दूर हो जाएंगी इनशाअल्लाहु तआ़ला, निराश होने की आवश्यकता नहीं अल्लाह बहुत बड़ा है।

(उर्दू लेख का सारांश)

❖❖❖

जगनायक.....

किया जो मस्जिदे ख़ैफ से करीब है, तीसरे जमरे तक हर एक पर सात सात कनकरियाँ फेंकी। हर कनकरी पर तकबीर कहते और जब सात पूरी हो जाती तो हाथ उठा कर दुआ करते थे। दुआ इतनी लम्बी करते जितनी देर में सूरह बकरा पढ़ी जा सके। लेकिन तीसरे जमरे पर दुआ नहीं फ़रमाई और कनकरियाँ फेंकने के बाद ही वापस आ गए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज के दौरान छः जगहों पर दुआ के लिए ठहरे। कोहे सफा पर, कोहे मरवा पर, मैदाने अरफात में, मुज़दलफा में, पहले जमरे के क़रीब, दूसरे जमरे के करीब। आपने मिना में दो खुतबे दिए। एक कुर्बानी के दिन जिसका ज़िक्र हो चुका है, दूसरा अय्यामे तशरीक़ के दरमियानी दिन में।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो दिन में कनकरी मार कर जाने में जल्दी नहीं की बल्कि तीसरे दिन भी रुक कर पूरे तीन दिन कनकरी मारी और मंगल के दिन जुहर के बाद वादी–ए–मुहस्सब की तरफ़ रवाना हुए। वहां जुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ें अदा फरमाईं और सो गए। फिर उठ कर मक्का मुकर्रमा तशरीफ ले गए और सहरी के वक़्त तवाफे विदा फ़रमाया।

❖❖❖

हमारी समस्याओं का समाधान "दो बातों में"

—मौलाना सै0 मुहम्मदुल हसनी रह0

करीब के बीते दिनों की एक घटना है, कि एक जगह महामारी फूट पड़ी और लोग घबरा उठे और लोग भयभीत होने लगे, ऐसी हालत में एक साहिब घबराए हुए एक ईश भक्त (साहिबे दिल) के पास आए, और अपनी घबराहट और भय बयान करने लगे, साहिबे दिल ने उनकी हालत देख कर कहा कि आखिर इतना परेशान होने की क्या बात है, अल्लाह तआला देख रहा है, सुन रहा है और उसकी मरजी और चाहत के अनुसार सारे काम हो रहे हैं वह रहीम भी है, अलीम (सर्वज्ञानी) भी है, हकीम (नीतिज्ञ) भी है, और कदीर (सर्वशक्तिमान) भी है तो फिर घबराने परेशान होने और साहस हारने की क्या बात है? उन साहिब का कहना है कि इस उत्तर ने मेरी आँखें खोल दीं और ऐसा लगा जैसे दिल का सारा बोझ उतर गया और सारा भय जाता रहा।

हमारी वर्तमान समस्याओं, कठिनाइयों, आशंकाओं के लिए यह अचूक समाधान है, जिसके सामने सांसारिक भयानक बड़े से बड़े भयंकर बादल नहीं टिक सकते, जिसके सामने भौतिक साधन प्रभाव रहित नज़र आते हैं, वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस कहता है हो जा, बस वह हो जाता है यह वह खुदाई ताकत है जिसके बाद हालत बदल जाने बल्कि ज़मीन व आसमान के बदल जाने में किसी प्रकार की देरी को सोचा भी नहीं जा सकता लेकिन उस ताक़त को अपनी ओर फेरने और रब की मदद प्राप्त करने के लिए दो चीज़ों की ज़रूरत है—

1. अल्लाह पर भरोसा और अल्लाह से सम्बन्ध, और इस तरह अल्लाह पर भरोसा कि वह हम को नष्ट न करेगा, किसी जालिम अत्याचारी शख़्स को हम पर सत्ता के अवसर न देगा, हम को रुस्वाई और गुलामी से बचाएगा, कुर्आने मजीद में इरशाद है— अनुवादः तुम्हारे रब ने कहा मुझ से मांगो मैं दूंगा निः संदेह जो लोग मेरी इबादत (उपासना) से मुँह मोड़ते हैं वह जहन्नम में दाखिल होंगे रुस्वा हो कर, दूसरी जगह बताया कि "हम उसकी गरदन की जान वाली रग से भी ज़ियादा करीब हैं"।

हदीस शरीफ में आया है "मैं अपने बन्दे के अच्छे गुमान के मुताबिक़ (अनुसार) हूँ"।

दूसरी हदीस में आया है कि "अगर बन्दा अपनी तदबीरों पर भरोसा करता है और अपनी समझ के बलबूते पर अपने लिए रास्ता बनाता है तो फिर अल्लाह तआला को उसकी कोई परवाह नहीं होती, और हदीस के अल्फ़ाज़ में उसकी उसको ज़रा भी परवाह नहीं होती कि वह किस वादी में जा कर हलाक होगा"।

इन आयात और अहादीस तक महदूद नहीं बल्कि सारा कुर्आन और हदीस अल्लाह पर भरोसे की अहमियत

(महत्व) और उसकी बरकतों और असरात के ज़िक्र और उसके खिलाफ चलने पर वईदों (चेतावनियों) से भरा हुआ है और इस पर इतना जोर दिया गया है कि तौहीद व रिसालत के बाद सबसे ज़ियादा अहमियत इसी की मालूम होती है।

दूसरी चीज़ अल्लाह से सम्बन्ध है जो भरोसे के साथ साथ है बल्कि यह कहना सही होगा कि अल्लाह से तअ़ल्लुक के बिना अल्लाह पर भरोसा सम्भव नहीं, जब तक खुदा से रिश्ता दुरुस्त न होगा, नीयत ठीक न होगी, अपनी करनी पर दृष्टि न होगी, खुदा से महब्बत और उसका भय पैदा न होगा, उस वक्त तक उस पर भरोसा और उसके वादों पर पूरा विश्वास कैसे हो सकता है, लेकिन इसमें शक नहीं किया जा सकता कि तअल्लुक म अल्लाह (अल्लाह से सम्बन्ध) का प्रमाणीकरण अल्लाह पर भरोसे की सूरत में होता है और उसके करिश्मों (लीलाएं) उसके हृदय में विद्यमान होती हैं। अगर अल्लाह से सम्बन्ध की समझ न हो तो देखना चाहिए कि उसमें भरोसे और विश्वास का कितना भाग पाया जाता है, यही उसके जांचने का सबसे बड़ा मापदण्ड है, सबसे बड़ा मज़हब, और सबसे ऊँचा पद है।

हज़रत इब्राहीम अलैहि–स्सलाम जब वादिये गैरजी जरअ़ (ऐसी ज़मीन जहाँ घास भी न उगे) की तरफ से हज़रत हाजिरा को छोड़ कर जाने लगे तो हज़रत हाजिरा ने यही सुवाल किया कि क्या आपके अल्लाह ने इसका हुक्म दिया है? जब उनको यह बात मालूम हो गई कि अल्लाह का यही आदेश है तो बड़े इत्मीनान से कहा "तब तो वह हमें नष्ट नहीं करेगा"।

हज़रत मूसा अलैहि–स्सलाम और उनके साथियों को जब फिरऔन की सेना ने उनको समुद्र के किनारे पहुँचा दिया और अब देखने में बचाव की कोई सूरत बाकी न रही उस वक्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने किस भरोसे और किस प्रेम से कहा "हरगिज़ नहीं मेरे साथ मेरा अल्लाह है वह मुझे ज़रूर रास्ता दिखाएगा"।

बद्र के मौके पर जब जब मुसलमानों के पैर उखड़ने लगे और लगा कि यह मुट्ठी भर जमाअत जो पूरी इन्सानियत के लिए रौशनी कि आख़िरी किरन थी कहीं डूब न जाए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस दर्द, किस एतिमाद और किस तअल्लुक़ और दिल की गहराई के साथ दुआ करते हुए यह प्रार्थना की "ऐ अल्लाह अगर यह जमाअत मिट गई तो तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा"। इन तीनों वाकिआ़त में अल्लाह से सम्बन्ध, विश्वास और भरोसा, और प्रेम की ऐसी उपमा है कि किसी एक को दूसरे से (अर्थात भरोसे के सम्बन्ध से) अलग करके नहीं देखा जा सकता और यही वह उनसुर (तत्व) हैं जिनके बाद इन्सान का रिश्ता संसार के रचयता से इस तरह बढ़ जाता है कि फिर कोई बाहर की शक्ति उसको कमज़ोर नहीं कर सकती, इसके अलावा नफ़्से मुतमइन्नः

शेष पृष्ठ.....26 ...पर

चुग़ल खोरी (परोक्ष निन्दा) और ऐब जोई (दोषान्वेषण)

—अल्लामा अशरफ़ अली थानवी से लाभान्वित

चुग़ल ख़ोरी (परोक्ष निन्दा) ग़ीबत की शाखा है, हिन्दी में दोनों का अनुवाद एक है परन्तु दोनों में बड़ा अन्तर है। ग़ीबत किसी का दोष उसके पीठ पीछे दूसरों से बयान करने को कहते हैं यह बड़ा पाप है, परन्तु चुग़ली किसी की बात को उसके पीठ पीछे किसी से इस प्रकार बयान करने को कहते हैं कि उसमें जिससे चुग़ली की जा रही है उसका कोई दोष और शिकायत भी होती है, ज़ाहिर है जिससे चुग़ली की है उसको जिसकी चुग़ली की है उस पर गुस्सा आएगा और दोनों में लड़ाई चल पड़ेगी यह फसाद चुग़ल खोर के कारण हुआ। अगर ध्यान से देखा जाए तो चुग़ली निराधार होती है ज़रा सी बात होती है जो बढ़ कर बात का बतंगड़ बन जाती है इस प्रकार चुग़ली गीबत से बढ़ा हुआ पाप है जिसकी ख़राबियां खुली हुई हैं और इसे सब जानते हैं इस का इलाज यह है कि चुग़ली सुनी न जाए, जिससे चुग़ली की जाय वह सोचे कि यह चुग़ल खोर जिस तरह दूसरे की चुग़ली मुझ से कर रहा है ऐसा ही मेरी चुग़ली एक में दो लगा कर दूसरे से करेगा, मगर इस का क्या किया जाए कि कान के कच्चे एक दूसरे की चुग़ली बड़े उत्साह से सुन कर अपने भाई से लड़ाई कर लेते हैं, जबकि अपनी चुग़ली को बहुत बुरा मानते हैं, बस चाहिए कि चुग़ली न सुन कर इसका दरवाजा बन्द किया जाए।

यहाँ ग़ीबत का एक छुपा रोग बयान करेंगे जिसको गहरी नज़र वाले ही समझ पाते हैं, ग़ीबत करने वाले को जब ग़ीबत में मज़ा आने लगता है तो वह एक बहाना बयान करने लगता है और कहता कि फुलां की बुराई नही करना चाहते अपितु उसका सुधार चाहने के लिए ऐसा कहते हैं लेकिन ध्यान से देखा जाये तो ग़ीबत करने वाला जिसकी ग़ीबत करता है उसका दोष दूसरे के सामने बयान करता होता है वास्तव में वह दूसरों के ऐब ढून्ढने (तजस्सुस) का गुनाह करके ग़ीबत का गुनाह करता है यह रोग बड़ी मुश्किल से जाता है इसलिए कि ग़ीबत करने वाला इस धोखे में रहता है कि वह दूसरे के सुधार का भला काम कर रहा है जब की वह तजस्सुस और ग़ीबत दो गुनाह एक साथ कर रहा है अगर उसका उद्देश्य सुधार होता तो वह दूसरों से उसका दोष न बयान करता अपितु जिसको दोषी समझ रहा है उससे मिलकर उसको समझा कर उसका दोष दूर करने का प्रयास करता, दूसरों के सामने उसका दोष बयान करना उसको नीच बताना हुआ उसका अपमान करना हुआ।

इस रोग को समझने और छोड़ने के लिए एक मिसाल (उदाहरण) पर ध्यान दीजिए, अगर आपके बेटे में कोई ऐब हो जिसे आप जानते हों, मगर दूसरा न जानता हो तो आप यही चाहेंगे कि अपने बेटे का ऐब दूसरों से

न बयान करें और दूसरे न जानें आप खुद कोशिश करेंगे कि उसका ऐब किसी तरह दूर हो इसी प्रकार दूसरों के ऐबों को बयान करने के बजाय उनको छुपाते हुए दूर करने की कोशिश करना चाहिए। अलबत्ता अगर यह समझ में आये कि मेरी कोशिश से उसका ऐब दूर न होगा बल्कि उसके फुलां मुरब्बी व हमदर्द की तवज्जुह से दूर हो सकता है और उसका दोष ऐसा है जिससे समाज को हानि पहुँच रही है तो उसका ऐब उसके मुरब्बी को चुपके से हमदर्दी के साथ बता दें यह वैसा ही है जैसे अपने लड़के का ऐब दूर करने के लिए उसके उस्ताद (गुरु) से बयान किया जाये।

ग़ीबत के गुनाह से बचने तथा समाज की दूसरी बुराइयों को दूर करने के लिए सू–रए–हुजुरात की दो आयतों के सारांश पर भी ध्यान देदें।

ऐ ईमान वालो एक दूसरे की हंसी न उड़ाया करो हो सकता है जिस की तुम हंसी उड़ा रहे हो उस का परिणाम तुम से अच्छा हो इसी प्रकार औरतें एक दूसरे की हंसी न उड़ाया करें हो सकता है वह जिन की हंसी उड़ा रही हैं उनका परिणाम उनसे अच्छा हो, और देखो आपस में एक दूसरे का दोष बयान करके ताना (व्यंग्य) न कसा करो और किसी के किसी ऐब पर उसका बुरा नाम न रखा करो, जैसे किसी की एक आँख है तो उसे काना कह कर न पुकारो, कोई लंगड़ा है तो लंगड़ा नाम न रखो इस तरह नाम रखना ईमान वालों के लिए बड़ा गुनाह है इससे तौबा करना चाहिए जो तौबा न करेगा उसकी गिन्ती ज़ालिमों में होगी। ऐ ईमान वालो किसी के बारे में जियादा गुमान (सम्भावना) करने से बचो कि बाज गुमान गुनाह होते हैं, और किसी की टोह में न रहा करो अर्थात दूसरे के ऐब न ढून्ढा करो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम यह पसन्द करोगे कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाओ, इससे तुम घृणा करोगे तो ग़ीबत न करो कि ग़ीबत करना ऐसा ही है जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।

अतः अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा सुन्ने वाला है और बड़ा दयालू है।

(सू–रए–हुजरात आयत नं0 11,12 का मफहूम) इन आयतों में निम्नलिखित दोषों से बचने का बयान है–

1. दूसरे का त्रिष्कार करने के लिए उसकी हंसी उड़ाना।
2. सिकी के दोष पर उसंको व्यंग्य (ताना) देना।
3. किसी के दोष पर उसका बुरा नाम रखना।
4. ज़ियादा गुमान करना विशेष कर किसी के बारे में बुरा गुमान करना।
5. दूसरों के दोष ढून्ढना।
6. ग़ीबत करना इसी में चुगली खाना भी आ गया।

अगर समाज इन ऐबों (दोषों) को छोड़ दे तो समाज का बड़ा सुधार हो जाये। अल्लाह तआला हम सब को इन ऐबों से बचाये और अपनी पसन्द की राह पर चलाये। आमीन!

❖❖❖

कुछ पैग़म्बरों और बुज़ुर्गों के हाथ के हुनर का बयान

—फ़ौजिया क़ामिला बी0ए0

हज़रत आदम अलैहि–स्सलाम ने खेती की है और आटा पीसा है और रोटी पकाई है। हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने लिखने और सिलाई का काम किया है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने लकड़ी तराश कर कश्ती बनाई है जो बढ़ई का काम है। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम तिजारत करते थे। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम भी तिजारत करते थे। हज़रत ज़ुलकरनैन जो बहुत बड़े बादशाह थे और बाज़ों ने उनको पैग़म्बर भी कहा है वह ज़ंबील बुनते थे जैसे यहाँ डलिया या टोकरी होती है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने खेती की है और तामीर का काम किया है, ख़ाने काबा बनाया था। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम खेती करते थे। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम तीर बना कर निशाना लगाते थे। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम और उनके सब फ़रज़ंद बकरियां चराते थे और उनके बच्चों को फ़रोख़्त करते थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ग़ल्ले की तिजारत की है जब क़हत पड़ा था। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के यहाँ ऊँट और बकरियों के बच्चे बढ़ते थे और खेती होती थी। हज़रत शुऐब अलैहिस्स–लाम के यहाँ बकरियां चराई जाती थीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कई साल बकरियाँ चराई हैं और उनके निकाह़ का यही महर था। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने तिजारत की है। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम खेती करते थे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़िरह बनाते थे जो कि लोहे का काम है। हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम बड़े हिकमत वाले आ़लिम हुए हैं और बाज़ों ने उनको पैग़म्बर भी कहा है उन्होंने बकरियां चराई हैं। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ज़ंबील बुनते थे। और हज़रत ज़करया अलैहिस्सलाम लकड़ी का काम करते थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने एक दुकान दार के यहाँ कपड़े रंगे थे। हमारे पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का बल्कि सब पैग़म्बरों का बकरियाँ चराना भी बयान हो चुका है, अगरचि उन पैग़म्बरों का गुज़र इन चीज़ों पर न था मगर ये काम किये तो हैं, इनसे शर्म तो नहीं की है और बड़े–बड़े आलिम जिनकी किताबों का मसअला सनद है उनमें से किसी ने कपड़ा बुना है किसी ने चमड़े का काम किया है किसी न जूती सीने का काम किया है किसी ने मिठाई बनाई है फिर ऐसा कौन है जो इन सबसे ज़ियादा तौबा तौबा इज़्ज़तदार है। (बिहिश्ती ज़ेवर भाग दस से ग्रहीत)

अलहम्दुलिल्लाह आज अपने मुल्क में मुसलमानों में सनअ़त (कारीगरी) का हुनर कम नहीं है। हैण्ड लूम से कपड़ा बुनने में तो उनका

जवाब नहीं, तिलहन से तेल निकालने में भी वह बड़ी महारत रखते थे लेकिन मशीनों के आ जाने से उनके कोल्हू नापैद हो गये, मशीनों से तेल निकालने में भी वह बढ़चढ़ कर हिस्सा ले सकते हैं। लोहे के काम की भी देश में बड़ी खपत है। और बहुत से मुसलमान इसमें महारत रखते हैं उनके ज़रिये इस सनअत में मुसलमान बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले सकते हैं, कपड़ा सिलने का काम तो ज़ियादा तर मुसलमान ही कर रहे हैं इस काम की भी बड़ी मांग है मुस्लिम नौजवानों को इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए। लकड़ी के काम की हर घर में ज़रूरत रहती है लिहाज़ा मुसलमान नौजवानों को इस तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए और इस काम को सीख कर और सिखा कर हलाल रोज़ी कमाना चाहिए। आजकल हर शख़्स के पास मोटर साइकिल है, और साइकिलें भी अनगिनत हैं, लिहाज़ा पंचर बनाने का काम सीख कर हलाल रोज़ी कमाई जा सकती है। आज राज मिस्त्री की बड़ी मांग है यह काम मेहनत का ज़रूर है मगर बड़ी अच्छी कमाई का है, तिजारत से तो आदमी बड़ी तरक्की कर सकता है उसको अपनाना चाहिए, सनअ़त के कामों में कपड़ों की रंगाई का काम भी बहुत अहम है, आज मोबाइल हर हाथ में दिखता है मोबाइल की कुछ खराबियाँ दूर करने का काम आ जाए तो इससे भी आमदनी हो सकती है, जिन मुसलमानों के पास देहातों में खेत हैं आज वह उसकी तरफ़ से बे तवज्जुही करके शहर भाग रहे हैं या खलीजी मुल्कों का रुख़ कर रहे हैं, उनको चाहिए कि खेती पर तवज्जुह दें, और बेहतर तरीक़े पर खेती करके हलाल रोज़ी पैदा करें, इसको शर्म की बात न जानें ऊपर आ चुका है कि हमारे दादा आदम अलैहिस्सलाम ने खेती की तो हम खेती करने में क्यों शरमाएं।

यह बातें इसलिए लिखी गईं कि आज कल मुस्लिम नौजवानों को सरकारी नौकरियां मिलने में बड़ी कठिनाइयां हैं हमारे लीडरों का कहना है कि मुस्लिम नौजवान सरकारी नौकरियों के योग्य नहीं होते, लेकिन देखा यह जा रहा है कि ऐसा नहीं है, उनको चपरासी की जगहें भी आसानी से नहीं मिल पातीं, हम अपने भाइयों से यह कहेंगे कि वह कोशिश करके अपने को सरकारी नौकरियां पाने के योग्य बनाएं लेकिन यह सही है कि सरकारी नौकरियों के योग्य बनने में जिस धन और समय की ज़रूरत है वह आम मुसलमानों को प्राप्त नहीं है, ऐसे में उनको चाहिए कि सर्व प्रथम बचपन में कुर्आन शरीफ़ पढ़ना सीख लें, दीन की रोज़ाना काम आने वाली बातें सीख लें, इस्लामी अ़क़ीदे को समझ लें नमाज़ सीख कर उसे अपना लें फिर कोई हुनर सीख कर हलाल रोज़ी प्राप्त करने का प्रयास करें, इनशाअल्लाह अल्लाह की मदद होगी और भूखे न रहेंगे। और देखा भी गया है कि इन्हीं हुनरों के ज़रिए अल्लाह ने बाज़ लोगों को बहुत बढ़ा दिया है। बस 'हिम्मतें मरदाँ मददे खुदा'

अगर हम साहस से काम लेंगे तो अल्लाह की मदद आएगी।

आख़िर में यह कहना भी ज़रूरी मालूम होता है कि अगर कोई नौकरी नहीं तो मज़दूरी में भी कोई शर्म न समझना चाहिए, आज कल तो सरकारी तौर पर मनरेगा के तहत उचित मज़दूरी दी जाती है उसे करना चाहिए और दूसरी मज़दूरी में भी अच्छी उजरत मिलती है हमारे बुज़ुर्गों ने मज़दूरी भी की है, इसी पर किसी ने क्या खूब कहा है–

अब शरीफ़ों को है मज़दूरी से आर
क्या अ़ली से बढ़ के हैं यह ज़ी वक़ार

अल्लाह तआला हम बे सहारों की मदद फरमाए और तमाम भाइयों को दीन पर क़ाइम रखे और हलाल व पाक रोज़ी प्रदान करे। आमीन!

❖❖❖

प्रिय पाठको!

आप अपने सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर सवाब कमाएं।

सम्पादक

हमारी समस्याओं .....

(मानव का उच्च स्तर जिसको हिन्दी में सन्तुष्टि मन कह सकते हैं) प्राप्त करने के लिए इन दोनों चीज़ों से बढ़ कर कोई और साधन नहीं, हृदय की बेचैनी, भय, साहस और अन्धविश्वास, और हृदय की आशंकाओं को दूर करने के लिए इससे (अर्थात अल्लाह से सम्बन्ध और उस पर भरोसा) से ज़ियादा प्रभाव कारी कोई दूसरी चीज़ नहीं। कुर्आन मजीद में आया है "खूब याद रखो अल्लाह की याद से दिल इतमीनान पाते हैं। दूसरी ज़गह है जो अल्लाह पर भरोसा करता है वह उसके लिए काफी हो जाता है। निराशा तथा बेचैनी कल्पना के वह बादल हैं जो अल्लाह से कमज़ोर सम्बन्धों के सबब दिल पर छा जाते हैं, वास्तव में अलग से अकसर वह कल्पित होते हैं, हृदय में एक खुदा की याद और उसकी परिपूर्ण और उसकी विस्तृत कृपा को समझ लेने पर कल्पित बादल स्वतः छट जाते हैं, और आशा तथा विश्वास से हृदय जगमगा उठता है, अंधविश्वास के सबब जितनी कल्पित आशंकाएं आ जाती हैं और वह हृदय को व्याकुल कर रही होती हैं हवा में उड़ जाती हैं और हृदय हर प्रकार के विकार से स्वक्ष हो जाता है, और सन्तुष्ट मन प्राप्त हो जाता है। यह अल्लाह से तअल्लुक़ और अल्लाह पर एतिमाद हमारी समस्याओं का समाधान भी है, और सफलता का साधन भी है तथा भय तथा दुख की दवा भी है, इसके लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है, बस इसको हृदय में बिठाना चाहिए, व हृदय जो अल्लाह के तअल्लुक़ और उस पर एतिमाद से खाली हो गया है और जिसमें गैरुल्लाह की बातें भरी पड़ी हैं इसे स्वक्ष करने और अल्लाह के प्रेम से प्रकाशित करने की आवश्यकता है। अन्त में हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि "ऐ अल्लाह अपना प्रेम प्रदान कर और अपने पर भरोसा करने का सामर्थ्य दे, आमीन!

❖❖❖

कर बन्दगी ख़ुदा की

—इदारा

फ़िरऔन को घमण्ड ने दरया में जा डुबाया
क़ारून को भी धन ने, धरती में था धसाया
नमरूद ने जहाँ में, कैसा था ज़ुल्म ढाया
भूला ख़ुदाई अपनी, मच्छर ने जब गिराया
अब तो समझ ले प्यारे, बन्दा है तू ख़ुदा का
करता घमण्ड क्यों है, नादान होश में आ
तू मान ले ये दिल से मिट्टी का है तू पुतला
ये हाथ पाँव तेरे, तिनके का हैं सहारा
आजीविका है देता, मालिक है जो जहाँ का
कर बन्दगी ख़ुदा की, बन्दा है तू ख़ुदा का

हिन्दुस्तानी मुसलमान.....

'मग़रिब' का समय सूर्यास्त होने के बाद शफ़क़[1] डूबने तक।

'इशा' का समय 'मग़रिब' (जो सूर्यास्त के बाद से लगभग डेढ़ घंटे तक रहता है) के बाद आरम्भ होता है और सुबह सादिक़ तक रहता है, परन्तु अर्ध रात्रि तक 'इशा' की नमाज़ पढ़ लेना चाहिए।

इन पाँचों समय की नमाज़ों में सत्तरह रक्अतें फ़र्ज़ हैं। फ़ज्र के समय दो रकअ़त, जुह्र के समय चार रकअ़त, अस्र के समय चार, मग़रिब के समय तीन, इशा के समय चार। इन फ़र्ज़ रकअ़तों के अतिरिक्त विभिन्न समयों में तीन वाजिब और बारह सुन्नतें हैं। सुन्नतों में फ़ज्र के समय दो रकअत सुन्नत, जुह्र में फ़र्ज से पूर्व चार सुन्नत और फ़र्ज के बाद दो सुन्नत, मग़रिब के समय फ़र्ज़ के बाद दो सुन्नत और इशा के समय फ़र्ज़ के बाद दो सुन्नत तत्पश्चात् तीन रकअतें वाजिब हैं जिनको वित्र कहते हैं। यह समस्त सुन्नतें मोवक्केदा हैं सुन्नत मोवक्केदा वह नमाजें हैं, जिनका निरन्तर पढ़ना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित हैं। वाजिब वह है जिसकी फ़र्ज़ के बराबर ताकीद आई है, किन्तु फ़र्ज़ से इसका दर्जा कुछ कम है।

---

1. शफ़क़ उस लालिमा का नाम है, जो सूर्यास्त के बाद पश्चिम की ओर क्षितिज पर विदित होती है, जिसे सान्ध्य लालिमा भी कहते हैं।

❖❖❖

दुरूद व सलाम

—मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0

हम्द बारी तआ़ला

ऐ खुदा मालिके आसमानो ज़मीं — साहिबे लौहो कुर्सीयो अ़र्शे बरीं
ज़िक्र तेरा मुबारक हयात आफरीं — जाँ फज़ा, दिलकुशाँ, दिलकशो दिलनशीं
पाक तेरी सिफत पाक तेरा है नाम — तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

खालिके दो जहाँ रब्बे कौनों मकां — जिन्नों इन्सों मलक तेरे मिन्नत कशाँ
रहम करता है तू है बड़ा महरबाँ — तेरे दर पर ही मिलती है सबको अमाँ
तेरी रहमत पे क़ायम है आ़लम तमाम — तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

सलात (दुरूद) व सलाम अ़ला ख़ैरिल अनाम

वह रिसालत मआब और शहे दो जहाँ — पाक नाम आपका ले ये गन्दी जुबाँ
है मजाल इसको क्या और जुरअत कहाँ — इक ख़याल आ गया और आँसू रवाँ
सय्यिदे वुल्दे आदम वह ख़ैरुल अनाम — उस पे लाखों दुरुद उन पे लाखों सलाम

कैसा वह जौहरे फर्द पैदा हुआ — सारे आ़लम में फैली है उसकी ज़िया
गुन गुनाने लगे हैं यह अर्जो समा — आ गया जाने कौनों मकाँ आ गया
कह उठे यक जुबाँ रात दिन सुबहो शाम — उसपे लाखों दूरूद उनपे लाखों सलाम

आमिना का वह प्यारा वह दुर्रे यतीम — बेकसों का सहारा वह लुत्फे अ़मीम
सबकी आँखों का तारा वह जाते करीम — जान व दिल माह पारा वह खुल्के अ़ज़ीम
जिसकी हर हर अदा वाजिबुल एहतिराम — उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसकी आमद से बादे नसीम आ गई — रहमते हक़ की हर सू घटा छा गई
छा गई और फिर नूर बरसा गई — ग़म की मारी थी दुन्या सुकूँ पा गई
ज़िन्दगी भर पिलाया महब्बत का जाम — उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

कारवां गुम था, तारीक और रात थी – ख़ौफ़ नाक एक जंगल था बरसात थी
सारी दुन्या थी क्या, बहरे जुलमात थी – बद हवासी थी बिगड़ी हुई बात थी
आ गया जुल्मते शब में माहे तमाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

ज़िन्दा दर गोर होती थीं उफ लड़कियाँ – कुफ़्र ख़न्दाँ था और जुल्म आतिश फिशाँ
आग की एक भट्टी बना था जहाँ – जुल्म वह! ले रहा था हर इक सिस्कियाँ
बख़्शी मुर्दा दिलों को हयाते दवाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जाहिलीयत में औरत थी इक जानवर – ठोकरें खाती फिरती थी वह दर बदर
राहो मंज़िल से अपनी थी वह बे ख़बर – कोई उसका न था, शाम थी बे सहर
औरतों को दिया हुर्रियत का मक़ाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसने कुन्दन बनाया मिसे खाम को – जिसने कुर्बा किया हक़ पे आराम को
सुब्ह से जिसने बदला हर इक शाम को – सारे आलम में फैलाया इस्लाम को
जिसपे नाजिल हुआ है खुदा का कलाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

मुअ़जिज़ा जिसका अदना था शक़्कुल क़मर – जिसकी आमद जहाँ में नसीमे सहर
उसकी आमद न होती जहाँ में अगर – ठोकरें खाती इन्सानियत दर बदर
लेके आया महब्बत का दिलकश पयाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

गालियाँ जिसने दी उसको तुहफे दिये – ज़ख़्म जिससे लगे ज़ख़्म उसके सिये
आफियत की दुआ मांगी सब के लिए – की जफ़ा जिसने बदले वफ़ा से दिये
जिसने सबको पिलाया महब्बत का जाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह ख़ुदा का नबी खातिमुल मुरसलीं – मतलए नूर थी जिसकी प्यारी जबीं
ज़ात ऐसी मिलेगी बताओ कहीं – हो जो इतनी अ़ज़ीम व वजीहो हसीं
जिसकी हर बज़्म, जिसके सबू जिसके जाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसपे जानें फिदा जिसपे कुर्बान दिल – आस्मानों जमीं रंगो बू आबो गिल
रह गया मिट के वह, हो गया जो मुखिल – कुफ़्र भी सर निगूँ शिर्क भी है ख़जिल
खाके पा के बराबर खवास व अवाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिसकी आमद से पहले थे घर घर सनम – मरकज़े शिर्क सारा बना था हरम
रख दिये शिर्क पर अपने दोनों क़दम – जिसकी अज़मत के शाहिद हैं लौहो क़लम
जिसका दोनों जहाँ में है आला मक़ाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

पाक दामन व पाकीजा कल्बो निगाह – उसकी इफ़्फ़त पे अपने पराए गवाह
कीमिया बन गया जिसपे डाली निगाह – रख दिया मेट कर हर खता व गुनाह
वह अ़फ़ीफ़ो करीम और आ़ली मक़ाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

हुस्न ऐसा, नहीं जिसका कोई जवाब – वह जबीं जो की है मतलए आफताब
ऐसे दन्दां, मिली जिनसे मोती को आब – रूए अनवर, कि है गर्द तक माहताब
हुस्ने आ़लम उसी पर हुआ है तमाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह तबस्सुम लबों पर सरापा बहार – वह तकल्लुम कि जैसे गुलों का निखार
खुल गई जो कभी जुल्फ़ भी एक बार – हो गई फिर हवा और फ़जा मुश्कबार
जिस की हर सांस पर है तसद्दुक़ मशाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह रसूलों में आख़िर जो मुरसल हुआ – जिस पे कुर्आन सारा मुनज़्ज़ल हुआ
जिसका हर लफ़्ज़ व जुम्ला मुदल्लल हुआ – दीने इस्लाम जिस पर मुकम्म्ल हुआ
हो गये जिस पे दीनो शरीअ़त तमाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

था जहां बहरे जुलमात में तह नशीं – लातो उज़्ज़ा के आगे पड़ी थी जबीं
उसपे सदक़े, दिया हम को दीने मुबीं – उसने बख़्शी हमें एक शरए मतीं
जिसने सबको बताया हलालो हराम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

बात मानी जिन्होंने सताए गये – आग के फर्श पर कुछ लिटाए गये
खींच कर कुछ सरेदार लाए गये – हक़ की आवाज़ फिर भी लगाए गये
थे ख़ुबैब और ख़ब्बाब जिसके गुलाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह सुहैब और सल्मानो यासिर बिलाल – जैद व अम्मार भी खुश खयालो ख़िसाल
जिनको हासिल यकीं था तमामो कमाल – जिनपे कुर्बान शाही जमाल व जलाल
हैं उसी के सभी खूबरू मुश्क फ़ाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

जिनकी कोशिश से बादे बहारी चली – जिनसे हर शाख़ गुलशन की फूली फली
चटकी इस्लाम की जिनसे हर हर कली – वह अबू बक्र व फारूक़ व उस्मां अ़ली
जिसके अदना ग़ुलाम फातिहे मिस्र व शाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

फ़ातिमा प्यारी बेटी हुसैन व हसन – पा–रए–दिल जिगर, गो–श्ए–जुज़ बदन
जिनसे आरासता है नबी का चमन – हैं चमन के गुलो लालओ नस्तरन
एक है सैफे हक़ एक सुल्हे तमाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह दयारे नबी रश्के अर्जों समा – पाक जिसकी ज़मीं पाक जिसकी फ़ज़ा
जिसका शीरीं है पानी मुअत्तर हवा – खाक को जिसकी कहते हैं ख़ाके शिफ़ा
शौक़ है उसकी जानिब चलूं तेज गाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

रश्क तुझ पर है मुझ को बहुत ऐ सबा – तू मदीने को जाती है सुब्हो मसा
एक मैं हूँ सरापा गुनाहो ख़ाता – काश मुझ को भी हासिल हो खाके शिफ़ा
मेरे लब पर यही रात दिन सुब्ह व शाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

आतिशे शौक़ है तेज़ से तेज़ तर – मैं हूँ गर्मे सफर हर नफ़स हर नज़र
है हसीं रहगुज़र इश्क़ है राह पर – रौ–जए–पाक है, मन्जिले मोतबर
मेरी किस्मत कि हूँ ज़ाइरो हम कलाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

देर से कह रही है दुरूद व सलाम – आ गया ऐ ज़ुबाँ, फिदवियत का मक़ाम
अब नबीये मुकर्रम का ले पाक नाम – हाँ मगर बा अदब और बसद एहतिराम
जिसके सद्क़े में आलम का सारा निज़ाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह हबीबे खुदा, ताहिरो मुस्तफ़ा – कासिमो हामिदो हुज्जतो मुरतज़ा
सादिको रहमतो तय्यिबो मुजतबा – ताहा, यासीन, मक्की वह ख़ैरुलवरा
वह शफीओ मुनीरो शहीदो इमाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

वह हिजाज़ी, तिहामी, यतीमो ग़नी – वह रऊफ़ो बशीरो नज़ीरो नबी
वह रसूलो मुज़क्किर अमीं हाशमी – वह हैं उम्मी लकब अबतही मुत्तक़ी
जिसके महमूद अहमद मुहम्मद हैं नाम – उसपे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

❖❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आसमानों पर हैं?

उत्तरः हाँ हम मुसलमानों का मानना है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित अपने शरीर के साथ आसमानों पर उठा लिये गये हैं, कुर्आन मजीद की सू–रए–निसा की आयत 157,158 से यही स्पष्ट होता है अल्लाह तआला ने बताया कि "उनको उन लोगों ने कत्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी तरफ उठा लिया" रिवायात में इस तरह बयान मिलता है, यहूद ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर झूठे आरोप लगा कर वक्त के बादशाह से सलीब पर चढ़ाये जाने का आदेश करवा दिया परन्तु जब उनको सलीब पर चढ़ाने के लिए ले जाने लगे तो अल्लाह तआला ने उन्हीं में से एक आदमी को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का कर दिया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जीवित आसमान पर उठा लिया, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुअ़जिज़ा था जो अल्लाह तआला ने दिखाया, जिस शख्स को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का कर दिया था उसको सलीब पर चढ़ा दिया गया वह बराबर कहता रहा कि मैं ईसा नहीं हूँ मगर वह सलीब पर चढ़ा कर मार दिया गया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चौथे आसमान पर जीवित सुरक्षित हैं, उनका जीवन किस प्रकार का है इसे अल्लाह जाने हम को जो बताया गया हम उतना ही जानते और मानते हैं।

प्रश्नः क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फिर दुन्या में आएंगे?

उत्तरः हाँ इसका इशारा सू–रए–निसा की आयत 159 में मिलता है कि वह इस दुन्या में फिर आएंगे और उस वक़्त के तमाम मसीही उन पर ईमान लाएंगे, और आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे रिवायत में भी मिलता है कि जब उपद्रवी दज्जाल निकलेगा और वह खुद खुदाई दावा करेगा उस वक्त उसका मुकाबला कोई न कर सकेगा, अल्लाह तआला ने उसका वध हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों लिख रखा है वह दिमश्क़ की मस्जिद के पूर्वी मनारे के द्वारा उतारे जाएंगे फिर वह हज़रत महदी के साथ मिल कर दज्जाल से लड़ेंगे और उसको क़त्ल कर देंगे।।

प्रश्नः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात कोई नबी न आएगा जब कि ईसा अलैहिस्सलाम आएंगे इसका क्या उत्तर है?

उत्तरः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आखिर ज़माने

में जो आऐंगे तो बेशक वह नबी होंगे मगर वह तो पहले से नबी हैं आखिरी नबी के पश्चात उनको नुबूवत नहीं मिली है, फिर वह जब आख़िर ज़माने में आएंगे तो वह आखिरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे और जो ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाऐंगे उनको वह आखिरी नबी की शरीअत पर चलाएंगे इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आख़िर ज़माने में आना हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन "मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा" के खिलाफ नहीं है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस दुन्या में दोबारा उतारे जाने के पश्चात चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस वर्ष जीवित रहेंगे फिर उनका देहान्त हो जाएगा, रिवायत में चालीस के बाद समय का कोई चिन्ह नहीं लिखा है इसलिए उलमा ने कहा कि चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस वर्ष भी हो सकते हैं।

रिवायत= अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन या उनके किसी सहाबी के कथन को रिवायत कहते हैं।

सहाबी= जिसने अल्लाह के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईमान की हालत में देखा हो उसको सहाबी कहते हैं, सहाबी का बहुत बड़ा दर्जा है सहाबा अस्हाब और सहाबा कहलाते हैं, सहाबी का बड़ा दर्जा है। नबी के बाद जो सहाबी न हो वह अपने ईल्म व अमल में कितना ही बढ़ जाए एक कम से कम दर्जे के सहाबी के दर्जे को भी नहीं पहुँच सकता।

प्रश्नः हज़रत, महदी कौन हैं?

उत्तरः हज़रत महदी अल्लाह के मक्बूल बन्दों में से हैं यह आखिरी ज़माने में पैदा होंगे, हज़रत हसन की औलाद से होंगे मुहम्मद उनका नाम होगा महदी लकब होगा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन को फ़रोग़ देंगे, उनका ज़माना ईमान वालों के लिए बड़ा अच्छा ज़माना होगा उन्हीं के ज़माने में दज्जाल निकलेगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे, दज्जाल मारा जायेगा। हज़रत महदी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में ही याजूज व माजूज निकलेंगे वह दुन्या में बड़ा फसाद मचाएंगे उनका कोई मुकाबला न कर सकेगा फिर उन पर अल्लाह का अजाब आएगा और वह सब मर जाएंगे, ऐसा ही रिवायात में मिलता है वल्लाहु अअ़लम।

प्रश्नः अल्लाह के पैगम्बरों (सन्देष्टाओं) सहाबा और दूसरे बुजुर्गों के नाम के पश्चात कुछ सम्मान के शब्द अरबी भाषा में लिखे जाते हैं, उनको समझाइये।

उत्तरः इस्लाम की बड़ी विशेषता तौहीद (ऐकेश्वरवाद) है, अतएव अल्लाह के पश्चात कोई कितना ही बड़ा हो उससे कुछ मांगने के बजाए उसके लिए अल्लाह से मांगने की शिक्षा है अतः जब हम अल्लाह के आखिरी नबी का ज़िक्र करते हैं तो कहते हैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या अलैहिस्सलातु वस्सलाम दोनों का अर्थ है उन पर अल्लाह

की दया तथा सलामती हो, किसी और नबी या रसूल का नाम लेते हैं तो कहते हैं अलैहिस्सलाम जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अर्थात हज़रत ईसा पर अल्लाह की सलामती हो, किसी फिरिश्ते के नाम के साथ भी अलैहिस्सलाम कहते हैं जैसे जिब्रील अलैहिस्सलाम। किसी सहाबी का नाम लेते हैं तो कहते हैं रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात अल्लाह उनसे राजी हुआ, जैसे हज़रत अबु बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु किसी दूसरे बुजुर्ग का नाम लेते हैं तो कहते हैं रहमतुल्लाहि अलैहि अर्थात उन पर अल्लाह की रहमत हो जैसे हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि आदि।

प्रश्नः टीवी देखना जाएज़ है या नहीं? उस पर मैच देखना, खबरें सुनना या कामेडी व सीरियल देखना कैसा है?

उत्तरः जो प्रोग्राम टीवी से अलग देखना जाइज़ हैं वह टीवी पर भी देखना जाइज़ हैं, जो प्रोग्राम अलग से देखना ना जाइज़ हैं वह टीवी पर भी देखना ना जाइज़ हैं। अगर वक्त में गुंजाइश हो और दूसरे काम प्रभावित न हों और नमाज़ें न छूटें तो कुछ मैच देखने में भी हरज नहीं है, खबरें औरतें पढ़ती हैं, कामेडी सीरियल में इश्क़ व महब्बत के किस्से होते हैं और औरतों का हुस्न दिखाया जाता है इसलिए उसका देखना जायज नहीं।

प्रश्नः नमाज़ की हालत में "हूँ" करके जवाब दिया जा सकता है या नहीं?

उत्तरः "हूँ" करके जवाब देने से नमाज़ फासिद (ख़राब) हो जायेगी।

प्रश्नः क्या किसी शक की बिना पर कि यहाँ "जिन" हैं, वहाँ जूते चप्पल न रखना कैसा है ऐसा खयाल शिर्क तो नहीं है?

उत्तरः शक का कोई एतिबार नहीं यह वहम है जो इस्लामी शरीअत में दुरुस्त नही है अलबत्ता यह शिर्क नही है।

प्रश्नः क्या कुफ़्र व शिर्क के गुनाह को अल्लाह तआला मुआफ़ न करेगा मगर दूसरे गुनाहों को मुआफ़ कर देगा?

उत्तरः जो मुसलमान वफ़ात पा जाएगा, उससे कुफ़्र व शिर्क का गुनाह न हुआ होगा मगर दूसरे गुनाह हुए होंगे तो अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि वह उसके गुनाह मुआफ़ कर के बख़्श देगा या फ़िर गुनाह की सज़ा दे कर बख़्श देगा लेकिन जो शख़्स कुफ़्र व शिर्क करके बे तौबा मरा होगा उसकी बख़शिश कभी न होगी कुर्आने मजीद की सू–रए–निसा की आयत 48 और 136 नीज़ दूसरी आयात से यही मालूम होता है अलबत्ता अगर किसी को ज़िन्दगी में सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाए तो कुफ़्र व शिर्क़ और दूसरे गुनाह भी मुआफ़ हो जाएंगे, पारा 24, सू–रए–ज़ुमर की आयत 53 से यही मालूम होता है। सच्ची तौबा से मुराद यह है कि गुनाह करने वाला अपने गुनाह पर नादिम (लज्जित) हो, गुनाह छोड़ दे और अल्लाह तआला से अहद करे कि आइन्दा गुनाह न करेगा और अल्लाह तआ़ला से मुआफ़ी (क्षमा) चाहे।

कभी अनजाने में मुँह से कुफ़्र की बात निकल जाती है इसलिए चाहिए कि आदमी

बराबर तौबा व इस्तिग़फार करता रहे।

प्रश्नः क्या यह सही है कि किसी मुसलमान .की वफात जुमे को हो या रमजान में हो तो उस पर कब्र का अ़ज़ाब नहीं होता है?

उत्तरः हाँ बाज रिवायतों से यह बात मालूम होती है कि ईमान वाला जुमे को या रमजान में वफात पाये तो उस पर कब्र का अ़ज़ाब नही होता है।

प्रश्नः नज़र लगने पर यह दुआ पढ़ना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः प्रश्न में लिखी हिन्दी में दुआ पढ़ने में नहीं आई अलबत्ता नज़र लगने पर "कुल अऊजु बिरब्बिल फ़लक़" और "कुल अऊजुबि रब्बिन्नास" की सूरतें पढ़ कर दम करें या सूरे कलम की आयत नं0 51 (पारह नं0 29) पढ़ कर दम करें या यह दुआ पढ़ कर दम करें "बिस्मिल्लाहिल्लजी ला यजुर्रुहू मअ़स्मिही शैउन फिल अर्जि वला फिस्समाइ व हुवस्समी उ़लअ़लीम"।

प्रश्नः सुन्नत नमाज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः मुअक्किदा सुन्नतों की बड़ी ताक़ीद है उनको उज्र के बिना छोड़ना गुनाह है।

प्रश्नः तरावीह की नमाज़ का औरतों के लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः तरावीह की नमाज़ औरतों के लिए भी सुन्नत है लेकिन जमाअत उन पर नही है वह घर पर तन्हा पढ़ लें अलबत्ता घर पर महरम के साथ जमाअत का नज्म हो सके तो जमाअत से पढ़ें।

प्रश्नः क्या कोई ऐसी रिवायत है जिसमें अल्लाह तआला की तरफ से यह कहा गया हो कि मैं अपने मक्बूल बन्दों का हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है वगैरह इस का क्या मतलब है?

उत्तरः हाँ ऐसी रिवायत मिलती है जिसमें अल्लाह तआला की तरफ से कहा गया है कि मैं अपने मक्बूल बन्दे का हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है वगैरह इस का मतलब यह है कि वह मक्बूल बन्दा अपने हाथ पाँव और दूसरे अंगों से अल्लाह की मर्जी के सिवा कोई काम नही करता है।

प्रश्नः क्या अल्लाह के वली कब्र में सुनते हैं?

उत्तरः अल्लाह के वली, अल्लाह के मख्सूस बन्दे होते हैं, उनका मुआमला अल्लाह के नजदीक खास हुआ करता है वह कब्र में सुनते हैं या नहीं इसमें इख्तिलाफ (मतभेद) है, पक्की बात यह है कि वह खुद नहीं सुनते अलबत्ता अल्लाह उनको सुना देता है।

प्रश्नः शिर्क और कुफ़्र में क्या अन्तर है?

उत्तरः "शिर्क"– अल्लाह के साथ साझी ठहराने को कहते हैं शिर्क करने वाला मुशरिक कहलाता है, मुशरिक अल्लाह को मानता है मगर अल्लाह की सिफत (गुण) "वहदहु, ला शरीक लहु" (वह एक है, उसका कोई साझी नहीं) का इन्कार करके अल्लाह का साझी ठहराता है वह बे तौबा मरेगा तो उसकी बख्शिश कभी न होगी।

"कुफ़्र"– अल्लाह के इन्कार को या अल्लाह के रसूल के इन्कार को या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बताई हुई गैब की

शेष पृष्ठ..... 38 पर

हमारी नयी नस्ल और बदलते मूल्य

—डॉ0 हैदर अली खाँ

किसी भी देश के उज्जवल भविष्य की निर्भरता उसकी नई नस्ल पर होती है। पूरा देश बड़ी उम्मीद के साथ अपनी नई नस्ल के विकास के लिए प्रयासरत रहता है और उसके लिए बड़ी–बड़ी कुर्बानियां भी पेश करता है। देश व राष्ट्र को नई नस्ल से यह अपेक्षा होती है कि वह उसके बहुमूल्य, मूल्यों की हिफाजत करे, उसको शक्ति दे तथा उसे स्थायित्व प्रदान करे। साथ ही उसमें अभिवृद्धि करे, लेकिन आधुनिक युग में द्रुतगति से हो रहे परिवर्तनों के चलते और बदलती परिस्थितियों के अन्तर्गत राष्ट्र की अपेक्षाओं की पूर्ति संभव नहीं दिखाई पड़ रही है। नई नस्ल और हमारे प्राचीन मूल्यों के बीच एक दुविधाजनक स्थिति दिखायी पड़ रही है। एक तरफ वह अपने बुजुर्गों, उनकी परम्पराओं और मूल्यों को देखता है तो दूसरी तरफ वह रोज़ बदलते मूल्यों, मान्यताओं तथा नये परिवेश व समय समय की मांग को दृष्टिगत रखता है तो उसे दुविधा होने लगती है। ऐसी परिस्थिति में उसे संयम एवं संतुलन का सदुपयोग करते हुए अपने लिए नया रास्ता खोजना पड़ता है। लेकिन कभी–कभी उक्त दुविधा इतनी विकट होती है कि वह अपना नया रास्ता तय नहीं कर पाता और वह परम्परा से बगावत कर लेता है। बदलते मूल्यों का सही विश्लेषण न कर वह समय की तेज धारा में बह जाता है और अपनी मंज़िल से भटक जाता है। आज हम अपनी नयी नस्ल पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि सामान्यतः वह तनाव (Tension), असंतुष्टि एवं बिखराव का शिकार है। उनमें से प्रायः के समक्ष जीवन का कोई निश्चित एवं स्पष्ट उद्देश्य नहीं है। उसके लिए प्राचीन परम्पराएं एवं मूल्य अपना महत्व खोते जा रहे हैं। इसके विपरीत नयी परम्पराएं एवं मूल्य उसे अत्यधिक आकर्षक प्रतीत होते हैं। यद्यपि कि वह गंभीरता से उनके वास्तविक एवं कल्याणकारी गुण–दोष पर विचार नहीं कर पाता और उन्हें अपनाने की जल्दबाज़ी कर बैठता है। यह स्थिति इतनी गंभीर है कि इसकी विवेचना सांगोपांग की जानी चाहिए।

आज का दौर भौतिकवाद (Materialism) का है। परलौकिक, अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास तेज़ी से हो रहा है। मनुष्य, मशीन बनता जा रहा है, जिससे उसमें उच्च मानवीय गुण तथा सद्भावना, करुणा, दया, प्रेम, न्याय, सहकारिता, भ्रातृभाव आदि का लोप होता जा रहा है। हमारी नयी नस्ल भौतिकवाद, निजीवाद, स्वार्थ–वाद, आदि के मकड़जाल में फंसती जा रही है। विडम्बना यह है कि वह भूलवश इसे ही श्रेयस्कर एवं अपने लिए उपयोगी मानती है। वह लक्ष्य एवं साधनों की पवित्रता को

प्राथमिकता देने के बजाय "चाहे जैसे भी हो" अपनी भौतिक इच्छाओं एवं कामनाओं को पूरा करना चाहता है। उसके द्वारा अनुचित साधनों के बेहिचक प्रयोग की समस्या भी हमारी गंभीर चिंता एवं चिंतन का विषय है। उपभोक्ता वाद (Consumerism) ने उसमें कृत्रिम आवश्यकताओं को जन्म दे दिया है और वह दुस्साहसिक तौर पर उसे पूरा करने में अपनी पूरी क्षमता को झोंक देता है। कहावत है कि "हजारों ख्वाहिशें ऐसी की हर ख्वाहिश पर दम निकले" इससे उसे सुकून नसीब नहीं हो पाता और वह मृग मरीचिका के चक्कर में दौड़ता रहता है।

भौतिकवाद के इस दौड़ में गलाकाट प्रतियोगिता से (Cut throat compettion) नयी नस्ल जूझ रही है। परिणाम यह है कि उसमें व्यक्तिवाद की भावना ज़ोर पकड़ती जा रही है। वह केवल अपनी हित सिद्धि को ही अपना लक्ष्य समझता है। लोभ एवं मानव स्वाआत्मिक सुख के चलते सह–जीवन एवं सहकारिता (Co-operation) की भावना का लोप होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में हमारी सामाजिक भावना की आत्मा ही समाप्त होती जा रही है। आज हमारी समादृत पूर्वी उच्च मूल्य (Oriental values) और परम्पराएं ह्रासोंमुख हैं। हमारी नयी नस्ल पाश्चात्य सभ्यता के गोद में तेजी से जा रही है। उसके वाह्य चकाचौंध से वह भ्रमित ही नहीं, उसकी श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता की क़ायल भी होती जा रही है जो हमारे लिए बड़ा ही ख़तरनाक है। पश्चिमी सभ्यता ने हमारी अपनी सांस्कृतिक श्रेष्टता को खतरे में डाल दिया है। आज संसार की दूरियां सिमट गयी हैं। भूमंडलीकरण का युग आ गया है। सूचना तंत्र में क्रांति आ गयी है। दूरदर्शन के वैश्विक चैनल एक तरफ ढेर सारी उपयोगी सूचनाएं परोस रहे हैं, तो दूसरी तरफ विचारहीन एवं नग्न दृश्य आकर्षक ढंग से प्रस्तुत कर युवा मन को उद्वेलित कर दे रहे हैं। वीडियो संस्कृति ने हमारी नयी नस्ल को गुमराह कर दिया है और उस पर एक नशा एवं जुनून सवार होता जा रहा है। समाज शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों की राय है कि आजकल के लैंगिक हिंसा में उक्त नयी संस्कृति का बहुत बड़ा योगदान है। उसे स्वयं यह आभास नहीं है कि वह क्या कर रहा है और कहां जा रहा है? जब उसे होश आएगा तो पता चलेगा कि वह माडर्न बनने के चक्कर में अपनी मूल्यवान थाती को गंवा चुका है। आज की फिल्मों, टेलीवीजन एवं नग्न भड़काऊ साहित्य के चलते निर्लज्जता, नग्नता और नशाखोरी की आदत बढ़ती जा रही है। 'लज्जा' जो हमारी संस्कृति का आभूषण था, हमारी नयी नस्ल से गायब होती जा रही है। आज फैशन का दौर है। आए दिन नये–नये फैशन सामने आ रहे हैं और हमारी नयी नस्ल उसका बुरी तरह शिकार होती जा रही

है। नयी नस्ल अपने व्यक्तित्व की रचना व विकास, नैतिकता एवं सदाचरण की जगह फैशन परस्ती द्वारा अपनी पहचान बनाना चाहती है जो स्पष्टतः एक बचकाना सोच है। हमारे देश में "सादा जीवन, उच्च विचार" को अत्यधिक महत्व प्राप्त है, लेकिन फैशनपरस्ती ने जीवन को आडम्बरयुक्त एवं सद्विचारों को "हेय" स्थान प्रदान कर दिया है।

अभी हाल ही में महात्मा गांधी ने सत्य एवं अहिंसा के रास्ते को हमारी तमाम समस्याओं के समाधान का माध्यम बताया था। उन्होंने इस पर सफलतापूर्वक अमल (Experiment) करके भी हमें दिखा दिया था। भारत के इस प्रयोग को अफ्रीका और एशिया के कई देशों ने सफलता पूर्वक आज़माया। आज संसार के अनेक देश तथा शासक सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह को क्रांति तथा न्याय प्राप्ति के लिए बेहतरीन साधन मान रहे हैं। लेकिन खेद है कि हमारी नयी नस्ल इस पर कम ही भरोसा करती है। आजकल, हिंसा, आगजनी, लूट–मार, बलपूर्वक घेराव तथा तोड़–फोड़ द्वारा अपनी अनुचित मांग मनवाने के लिए विवश किया जाता है। सत्याग्रह के बजाए दुराग्रह का सहारा लेना हमारी नयी नस्ल का रस्म हो गया है। आज सच्चाई और ईमानदारी की जगह धोखाधड़ी, विश्वासघात एवं झूठ का सहारा लिया जा रहा है। पहले लक्ष्य के लिए साधनों की पवित्रता पर ध्यान दिया जाता था मगर आज "चाहे जैसे भी हो" (Hook or by crook) उद्देश्य पूरा हो जाना चाहिए। सफलता की यही आज दलील बन गयी है। ये नये मूल्य निश्चित ही हमारे समाज को विनाश की ओर ले जायेंगे। आज का युग प्रचार एवं विज्ञापन का है। खोटी से खोटी चीज और निम्न एवं भ्रष्ट विचार को आकर्षक विज्ञापनों की मुलम्माबाज़ी द्वारा उसे उत्तम बहुमूल्य एवं ग्राह्य सिद्ध किया जाता है।

❑❑

जारी.....

आपके प्रश्नों के उत्तर .....

बातों के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं कुफ़्र करने वाले को काफिर कहते हैं, काफिर की भी अगर बे तौबा मरा तो उसकी बख्शिश न होगी। बाज़ आमाल शिर्किया होते हैं जैसे गैरुल्लाह को सजदा करना और बाज़ कलिमात कुफ़्रिया होते हैं जैसे शरीअ़त की बातों का मज़ाक उड़ाना या अल्लाह व रसूल पर एतिराज़ करना या ऐसी बात कहना जिससे मआजअल्लाह, अल्लाह या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीन निकलती हो, लिहाज़ा शरीअत के ख़िलाफ़ न कोई बात मुँह से निकालना चाहिए न ख़िलाफ़े शरीअ़त कोई अमल करना चाहिए और रोज़ाना तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिए ताकि जाने अनजाने में कोई ग़लत बात मुँह से निकल जाए या कोई ग़लत काम हो जाये तो वह मुआ़फ़ हो जाये।

❖❖❖

उर्दू सीखिये

—इदारा

हिन्दी के कुछ विशेष अक्षरों के उर्दू रूप

ड़ (ڑ): यह अक्षर शब्दों के आरम्भ में नहीं आता है, अपितु शब्दों के बीच में या अन्त में आता है, जैसे– बड़ा بڑا,बड़ी بڑی , बड़े بڑے,ताड़ تاڑ, पहाड़ پہاڑ आदि।

ढ़ (ڑھ): यह अक्षर भी शब्दों के आरम्भ में नहीं आता है, अपितु शब्दों के बीच में या अन्त में आता है, जैसे– बढ़ा بڑھا ,बढ़ी بڑھی,बढ़े بڑھے,बाढ़ باڑھ ,आदि।

ण (ڑ): यह अक्षर भी शब्दों के आरम्भ में नहीं आता है, इस अक्षर की आवाज़ में पहले 'अ' की आवाज़ निकलती है, जैसे–क्षण چھنڑ,कण کنڑ,गणतंत्र گنڑتنتر ,गणना گنڑنا आदि।

क्ष तथा **छ**: दोनों को उर्दू में چھ से लिखते हैं जैसे– क्षमा چھما,क्षेत्र چھیتر, छाल چھال छागल چھاگل आदि।

ज्ञ (گیا): हिन्दी के कुछ शब्द इस अक्षर से लिखे जाते हैं, जैसे– ज्ञान گیان ,ज्ञानी گیانی ,ज्ञाता,گیاتا,आज्ञा آگیا ,यज्ञ یگیہ आदि।

ऋ (رِ): इस अक्षर का नाम रिड़ि है इसकी ध्वनि 'रि' है, हिन्दी के बहुत से शब्द इसी अक्षर से लिखे जाते हैं, जैसे– ऋण رنڑ ,ऋतु رِت ,ऋषि رِشی ,ऋग्वेद رگ وید आदि।

हिन्दी के कुछ शब्द ऋ की मात्रा से लिखे जाते हैं, जैसे– कृपा کرپا ,कृषि کرشی ,मातृ भाषा ماترِبھاشا आदि।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

बादलों से बिजली-पानी चुराने की तैयारी— रूस के वैज्ञानिकों ने पूरी दुनिया से बिजली—पानी की किल्लत की समस्या खत्म करने के लिए नया उपकरण बनाया है। हवा में उड़ने वाले इस पन बिजली स्टेशन को नाम दिया है, एयर हाइड्रोइलेक्ट्रिक स्टेशन यानी एयरएचईएस। वैज्ञानिक एंड्रयू कजांत्सेव और उनकी टीम ने इसे बनाया है।

बादलों से सोखेगा नमी—

यह उपकरण हजारों वर्ग मीटर के आकार वाले एक विशाल गुब्बारे के जरिए बादलों के बीच पहुंचाया जाएगा। इसमें एक विशाल पर्दा लगा होगा, जो बादलों से नमी सोखेगा। फिर एक पतली सी पाइप लाइन के जरिए इस पानी को धरती तक पहुंचाया जा सकेगा। पानी के इस दबाव से उपकरण के अंतिम छोर पर लगा टर्बो जेनेरेटर बिजली पैदा करेगा। वहीं इस पानी का इस्तेमाल पीने में भी किया जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने इस उपकरण का प्रारंभिक स्वरूप तैयार कर लिया है इसके जरिए निचली सतह वाले बादल से एक घंटे में पाँच लीटर पानी भी उत्पन्न किया गया। यह प्रयोग पूरी तरह सफल रहा है। इसके बाद शोधकर्ताओं ने एक मुहिम छेड़ दी है, जिससे उपकरण का मूल स्वरूप तैयार करने के लिए फंड जुटाया जा सके।

800 ट्रेटा वॉट बिजली उत्पन्न की जा सकती है इस उपकरण के जरिए।

60 गुना होगी यह बिजली, धरती की कुल ज़रूरत की तुलना में।

400 गुना ज्यादा बिजली उत्पन्न करेगा, यह धरती के कुल संयंत्रों से।

07 हज़ार फुट की ऊँचाई पर उड़ेगा यह ऊर्जा संयंत्र।

सभी बुराइयों का स्रोत ट्विटरः सऊदी मुफ़्ती—

सऊदी अरब के शीर्ष मुफ़्ती ने कहा है कि देश के पुरुषों और महिलाओं में लोकप्रिय 'माइक्रोब्लॉगिंग साइट ट्विटर' कुछ और नहीं बल्कि झूठ और बुराई का स्रोत है। शेख अब्दुल अजीज अल शेख ने अपने फतवा टीवी पर बीती रात प्रसारित कार्यक्रम में कहा, "यदि इसका सही ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो यह वाकई में फायदेमंद हो सकता है लेकिन दुर्भाग्य से मामूली चीज़ों के लिए इसका दोहन किया जा रहा है"।

मुफ़्ती ने कहा कि ट्विटर 'सभी बुराइयों और विनाश का स्रोत है। उन्होंने कहा, "लोग यह सोच कर इसके पीछे भाग रहे हैं कि यह विश्वसनीय सूचना का स्रोत है लेकिन यह झूठ और फरेब का स्रोत है।"

स्वामी प्रसाद मौर्य ने यह कहा था—

- शादी में गौरी—गणेश की पूजा न करें क्योंकि यह मनुवादी व्यवस्था में दलितों व पिछड़ों को मुगराह कर उन्हें गुलाम बनाने की साजिश है।
- हिन्दू धर्म में अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछड़े सभी शूद्र हैं।
- सुअर को वराह भगवान कह कर सम्मान दे सकते हैं....गधे को भवानी, चूहे को गणेश, उल्लू को लक्ष्मी व कुत्ते को भैरों की सवारी कह कर पूज सकते हैं पर शूद्र को सम्मान नहीं दे सकते।
- ये गोबर के टुकड़े पर सिंदूर चढ़वाते हैं, पान सुपारी चढ़वाते हैं, पैसा भी चढ़वाते हैं। दलित व पिछड़े समाज के डॉक्टर व इंजीनियर चढ़ा भी देते हैं। जबकि चढ़वाने वाले अंगूठा टेक होते हैं। वह ठगते रहते हैं।
- दिमाग़ नहीं लगाते कि क्या गोबर का टुकड़ा भगवान के रूप में हमारा कल्याण कर सकता है?

❖❖❖